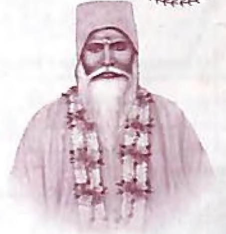
ॐ श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में आध्यात्मिक जगत की श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की अधिकृत मासिक पत्रिका



संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

प्रेम प्रकाश संदेश



15 अक्टूबर 2010

वर्ष 3, अंक 6

E-mail : premprakashsandesh@gmail.com
Telephone No. : 0751-4045144
Timing : Morning 8 to 10 AM, Evening 4 to 8 PM

वार्षिक शुल्क : रु. 60/- (भारतवर्ष में), रु. 600/- (विदेश में), एक प्रति रु. 5/-

प्रार्थना....

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

(रागु कोहियारी भजनु)

पंहिंजे शाह जी शिकारिणि आहियां मां।
बियो संसो शोकु न भायाँ मां।। टेक।।
बेहदि बुछिड़ी आउं भंगियाणी।
दरि त धणीअ जे आहियां विकाणी। झाड़ू रोजु लगायां मां।।1।।
लोक सजो भलि करे खुवारी, नाम जो नालो समुझियुमि भारी। नाम सां नींहुं निभायां मां।।2।।
नीचु निमाणी असुलु अयाणी, आहियां साहिब खे सेवाणी। प्रियनि खे परिचायां मां।।3।।
"कहे टेऊँ" सतगुर समुझायो, हरि रंग में हिकु लालु लखायो। सभजी सेव कमायां मां।।4।।

भावार्थ : मैं अपने परिपूर्ण परमात्मा की दासी हूँ. इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है. लोग मुझे इस कार्य के कारण हीन दृष्टि से देख रहे हैं। किन्तु मैं तो पहले से ही नीच व मेहतरानी हूँ. इस शरीर रूपी डिब्बे में कई प्रकार की गन्दगी भरी हुई है और इसे उठाकर चल रही हूँ. हम तो परमात्मा के द्वार पर बिके हुए हैं और मन रूपी मन्दिर में रोज झाड़ू लगाकर उसे साफ कर रहे हैं. सब लोग इस कार्य पर हमारा अपयश कर रहे हैं. परन्तु मैंने तो परमात्मा के नाम को ऊँचा मानकर व उसी के नाम पर कार्य किया है. मुझे तो परमात्मा से ही प्रेम निभाना है. मैं बिल्कुल ही नीच हूँ व मुझमें बहुत से अवगुण भरे हुए हैं. परिपूर्ण परमात्मा के चरणों में प्रार्थना कर रहा हूँ कि मुझे पवित्र बनायें. मैं रात दिन परमात्मा को रिझा रहा हूँ. श्री गुरुदेव ने यह उपदेश दिया है कि सभी प्राणियों में एक ही परमात्मा बसा हुआ है. ऐसा समझकर उनकी सेवा करनी चाहिये. उपरोक्त भजन वैराग्यपूर्ण गाकर जब अर्थ बताया तो प्रेमियों की आँखों में आँसू बहने लगे.

(सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत पवित्र पुस्तक के प्रथम–द्वितीय संयुक्त भाग के पृष्ठ १७२–१७३ से)

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में

कार्तिकोत्सव

7 नवम्बर से 21 नवम्बर 2010

कार्यक्रम

सद्‌गुरु टेऊँराम संकीर्तन (प्रभातफेरी)	प्रातः 6 से 7 बजे तक
प्रार्थना–सत्संग–कार्तिक कथा	प्रातः 7 से 9 बजे तक
भजन–सत्संग–आरती	सायं 4 से 6 बजे तक

विशेष पर्व उत्सव

7 नवम्बर रविवार	चन्द्रदर्शन, भाईदूज, गोवर्धन पूजा
11 नवम्बर गुरुवार	सांई टेऊँराम चौथ
14 नवम्बर रविवार	गोपष्टमी (गो–पूजन)
15 नवम्बर सोमवार	आवंला नवमी (आंवला पूजन)
17 नवम्बर बुधवार	हरि प्रबोधनी एकादशी (भीष्म पंचक दीप प्रज्जवलन)
21 नवम्बर रविवार	कार्तिक पूर्णिमा, सत्यनारायण

कार्तिक उत्सव समापन : 21 नवम्बर रविवार को प्रात: 6 से 11 तक
प्रभातफेरी, प्रार्थना, सत्संग, पाठों का भोग साहब, सत्यनारायण कथा, आरती एवं विशाल भण्डारा

पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पावन अध्यक्षता में

सद्‌गुरु टेऊँराम गौशाला मानसरोवर जयपुर में

गोपष्टमी महोत्सव

विशेष आयोजन

प्रातः 10 से 12 बजे तक
सत्संग, प्रवचन,
गौमाता पूजन, आरती
एवं विशाल भण्डारा



रविवार 14 नवम्बर 2010

कार्यक्रम स्थल

सद्‌गुरु टेऊँराम गौशाला,
वर्धमान सरोवर, भाग्यावास,
गणपतपुरा, मुकुण्ड फार्म हाऊस,
हीरापथ, मानसरोवर - जयपुर

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में आध्यात्मिक जगत की श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की अधिकृत मासिक पत्रिका

प्रेम प्रकाश संदेश

15 अक्टूबर 2010

वर्ष 3 अंक 6

मंगल आशीष

सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज

संस्थापक

सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षण-मार्गदर्शन

सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिए-	60 रू.	600 रू.
तीन वर्ष के लिए-	170 रू.	1700 रू.

जिन भी सदस्यों की शुल्क अवधि समाप्त हो गई हो, या हो रही हो उन्हें मनीआर्डर द्वारा अथवा सद्गुरु महाराज के यात्रा बुक स्टॉल व विभिन्न शहरों में नियुक्त प्रतिनिधियों के पास चंदा जमा करवाकर शीघ्र ही नवीनीकरण करवा लेना चाहिए.

सदस्यता शुल्क भेजने व पत्र-व्यवहार के लिए पता :-
व्यवस्थापक : प्रेम प्रकाश संदेश,प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर -474001
फोन: 0751- 4045144
प्रातः 8 से 10 व सांय 4 से 8 बजे तक
शेष समय 2454183 फैक्स:0751-4045144

परम पावन गुरू स्थल श्री अमरापुर धाम जयपुर में भी प्रति गुरूवार, रविवार प्रातः ८ से १२ बजे तक व प्रति शनिवार सांय ५ से ८ बजे तक प्रेम प्रकाश संदेश की नयी सदस्यता व नवीनीकरण के लिए शुल्क प्रेम प्रकाश संदेश काउंटर पर श्री कुमार चंदनानी व श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचन्द तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

भगवती महालक्ष्मी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता। तुमको निसिदिन सेवत हर विष्णू-धाता।। ॐ।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता। सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता।। ॐ।।
दुर्गारूप निरञ्जनि, सुख-सम्पति-दाता। जो कोई तुमको ध्यावत, ऋधि-सिधि-धन पाता।। ॐ।।
तुम पाताल निवासिनि, तुम हो शुभदाता। कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता।। ॐ।।
जिस घर तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता। सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता।। ॐ।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता। खान-पान का वैभव सब तुमसे आता।। ॐ।।
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहीं पाता।। ॐ।।
महालक्ष्मी (जी) की आरति, जो कोई नर गाता। उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।। ॐ।।

अनुक्रम

e-mail-premprakashsandesh@gmail.com

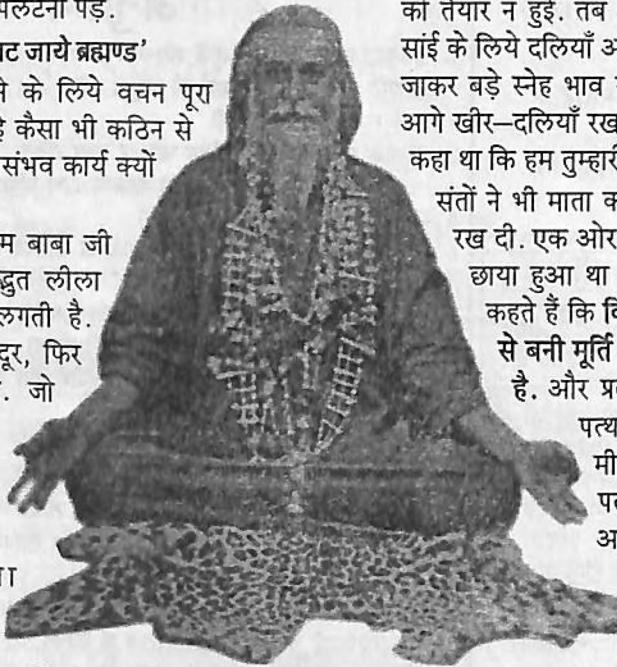
सद्‌गुरु श्री सांई टेऊँराम बाबा की अद्भुत महिमा-46

वचनबद्ध व भक्तवत्सल होते हैं संत-महापुरुष

महापुरुष योगी संत फकीरों की कुछ लीलाएं अद्भुत विलक्षण होती हैं. जिसे समझ पाना बड़ा मुश्किल होता है. साधारण लोगों की मति से कोसों दूर. कौन समझे ऐसे दुर्लभ योगी–महापुरुषों को! पर कहते हैं कि संत–महापुरुषों द्वारा दिया गया वचन– समय पाकर पूरा अवश्य करते हैं. वचनबद्ध होते हैं संत– फकीर! उस वचन को पूरा करने के लिये सृष्टिनियंता की विधि–विधान ही क्यों न पलटना पड़े.

'संत वचन पलटे नहीं, पलट जाये ब्रह्मण्ड'

उन्हें भक्त का मान रखने के लिये वचन पूरा करना पड़ता है. फिर चाहे कैसा भी कठिन से कठिन, असंभव से भी असंभव कार्य क्यों न हो.



एक समय सद्‌गुरु टेऊँराम बाबा जी ने भी एक ऐसी ही अद्भुत लीला रची. जो अविश्वसनीय लगती है. हमारी समझ से कोसों दूर, फिर भी है यह सत्य कथा. जो संत–महात्माओं ने प्रत्यक्ष रूप में देखी. श्री अमरापुर दरबार पर प्रतिदिन प्रात: लस्सी, ढोढा–चटणी या दलियाँ–खीर प्रसाद संत–महात्माओं को दिया जाता था. सद्‌गुरु सांई टेऊँराम बाबा भी अल्पाहार दलियाँ–खीर प्रतिदिन प्रसाद स्वरूप लेते थे. ऐसे ही एक समय एक माता जी की इच्छा हुई कि मैं भी सांई टेऊँराम बाबा को दलियाँ–खीर प्रसाद खिलाऊँ. सांई को रोज प्रार्थना करती. सांई टेऊँराम बाबा कहते– माता! आप चिन्ता मत करो, हम तुम्हें अपने आप बता देंगे. तब आप खीर–दलियाँ लेकर आना. समय व्यतीत होता रहा. माता को प्रतिदिन इंतजार रहता. कब सांई खीर–दलियाँ लाने के लिये कहेंगे. सांई को खिलाने की तीव्र उत्कण्ठा व प्रबल भाव था. कब कृपा होगी इस दासी पर! ये ही भाव था माता का. समय की न रुकने वाली गति, होती बड़ी बलवान. शरीर नश्वर, संसार के हर प्राणी को यह पञ्चभौतिक शरीर त्यागना पड़ता है, विधि–विधान के अनुसार.

कुछ समय पश्चात् सांई टेऊँराम बाबा पारब्रह्म की महाज्योति में लीन हो गये. ज्ञात होने पर भोली भाली माता वहाँ आयी. माता ने कहा– सांई! आप ऐसे नहीं जा सकते. मुझे वचन दिया था– हम तुम्हारी खीर खायेंगे. अब कौन समझाये उस भोली भाली माता को! दृढ़ विश्वास था सांई के वचन पर. संतों ने समझाने का प्रयास किया. पर वह माता भाव से भावित होकर कुछ भी सुनने को तैयार न हुई. तब कुछ संतों ने कहा– चलो माता! आप सांई के लिये दलियाँ और खीर लेकर आओ. माता शीघ्र ही घर जाकर बड़े स्नेह भाव से खीर–दलियाँ बनाकर लाई. सांई के आगे खीर–दलियाँ रख दी और कहा, हे सांई बाबा! आपने ही कहा था कि हम तुम्हारी खीर–दलियाँ खायेंगे.

संतों ने भी माता का भाव देखकर थोड़ी देर के लिये खीर रख दी. एक ओर शोकाकुल, उदासी, मायूसी का माहौल छाया हुआ था तो दूसरी ओर माता का अनन्य भाव! कहते हैं कि **विश्वास में बड़ी शक्ति होती है. जड़ वस्तु से बनी मूर्ति या प्रतिमा में भी चेतन शक्ति आ जाती है.** और प्रत्यक्ष रूप में दर्शन देती है. नामदेव ने पत्थर की मूर्ति से भगवान प्रकट किया, मीरा ने जहर को अमृत बना दिया, ज्ञानेश्वर पत्थर के पहाड़ पर बैठकर आगे चल आये. हरिदास महाराज ने पत्थर की मूर्ति से आँसू बहा दिए. ये सभी प्रत्यक्ष प्रमाण हैं. ऐसे ही माता की प्रेमा भक्ति ने सांई टेऊँराम बाबा को खीर– दलियाँ खाने के लिए बाधित कर दिया. अनहोनी सत्य साबित हुई. कुछ समय पश्चात् सांई टेऊँराम बाबा उठे और माता से कहा– लाओ और खीर और दलियाँ दो, हमें भूख लगी है. सांई ने बड़े ही भाद से खीर प्रसाद खाया. माता को आशीर्वाद दिया. माता को दिया वचन सार्थक कर पुन: परमधाम को प्राप्त हो गये. आसपास बैठा संत मण्डल भी बड़े विस्मय में पड़ गया. ये तो अद्भुत चमत्कारिक शक्ति है. सांई तो साक्षात् ईश्वरीय अवतार हैं. इन्हें समझ पाना बड़ा कठिन है.

सांई टेऊँराम बाबा की ऐसी रहस्यमयी लीलाओं को कोई विरला ही समझ सकता है. सिद्ध–तपस्वी को समझना अर्थात् भगवान को प्राप्त करना. ऐसे थे वचनबद्ध पूर्ण परमेश्वर सद्‌गुरु श्री सांई टेऊँराम बाबा! **–साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर**

सद्गुरु टेऊँराम कवितावली

(श्री प्रेमशंकर शर्मा, हरिद्वार)

17. सन्त जन नाव सम जान भव सागर में,
भाव युत जोई चढ़े सोई पार तरे हैं।
सन्त जन सुरतरु कामधेनु के समान,
भाव युत जोई सेवे तांके काज सरे हैं।
सन्तजन भृंग पुनि दीपक चन्दन सम,
अँग पलटाय कर निज सम करे हैं।
सन्तजन गंग सम जोई जन नाय लेवे,
कहे टेऊँ तांके सब पापन को हरे हैं।।

अर्थ : इस संसार रूपी सागर में सन्तों को नाव (नौका) के समान समझो. संसार सागर पार करने के लिए सन्तजन नौका के समान हैं. श्रद्धाभाव से युक्त होकर जो भी इस नाव का सहारा लेता है. वह संसार सागर से पार हो जाता है. इतना ही नहीं वरन् संतजन देववृक्ष कल्पवृक्ष के समान और कामधेनु के समान हैं. श्रद्धायुक्त होकर जो भी इनकी सेवा करता है. उसके सब मनोरथ पूरे हो जाते हैं. सन्तजन चन्दन के समान हैं, जो अंगों में लगाने पर शीतलता प्रदान करता है. वह दीपक के समान है, जो मार्ग को प्रकाशित करते हैं. वे भ्रमर के समान हैं, जो गुन–गुन करते हुए ज्ञान प्रदान करते हैं, इस प्रकार गुरु ज्ञान के द्वारा भक्तों को ज्ञानी बनाकर अपने समान बना लेते हैं. सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज कहते हैं कि सन्तजन गंगा के समान पवित्र हैं, जो भी मनुष्य उनका नाम लेता है, उसके समस्त पाप दूर हो जाते हैं, वे सन्तजन समस्त पापों को हरने वाले हैं.

18. कभी सन्त बन माहिं नगर निवास कभी,
कभी पट धारे कभी नगन गुज़ारे है।
कभी चढ़े हाथी घोड़े पैदल चलत कभी,
कभी ऊँचे सुर गावे कभी मौन धारे है।
कभी हँसे कभी रोवे कभी बैठे कभी सोवे,
कभी रजि खावे कभी भूख को सहारे है।
कहे टेऊँ हर्ष शोक सन्त कब नाहिं करे,
ब्रह्मानन्द में मगन रहे मतवारे है।।

अर्थ : सन्त, योगी और महात्मा कभी नगर में निवास करते हैं, कभी वन में साधना करते हैं, कभी साधना के लिए वस्त्र धारण करते है, तो कभी भगवान शिव की तरह दिगम्बर अर्थात् नंगे रहकर जीवन यापन करते हैं, संतजन समय के अनुसार यदि श्रद्धालु उन्हें घोड़े, हाथी पर बैठाकर तीर्थयात्रा कराते हैं, तो उन्हें वह भी स्वीकार है, साधना के लिए या लोकोपकार के लिए वे पैदल भी धर्म का प्रचार करते हैं, कभी मस्ती से झूमते हुए वे जोर–जोर से भगवान का भजन गाते हैं, गुणानुवाद करते हैं और संकीर्तन करते हैं तो कभी मौन होकर आत्मा में ही परमात्मा का साक्षात्कार करते हैं. कभी वे मिथ्या को सत्य समझने वाले अज्ञानी लोगों पर हंसते हैं, अथवा ईश्वर की प्राप्ति पर आनन्दित होते हैं. कभी समाज की दीन दशा देखकर उन्हें रोना आता है अथवा रो–रोकर वे परमात्मा को रिझाते हैं, कभी बैठकर कभी लेटकर वे निरन्तर साधना में लीन रहते हैं. कभी–कभी तो वे भस्म रमाकर ही और कभी भूख के सहारे अर्थात् भूखे रहकर ही साधना करते हैं. कभी रज (धूल) भक्षण करके ही वे ब्रह्म चिन्तन करते हैं.

सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज कहते हैं, कि सन्त महापुरुष कभी भौतिक वस्तुओं का हर्ष और शोक नहीं करते. ये सन्त तो ब्रह्मानन्द की प्राप्ति में सदा मगन रहते हैं, ब्रह्म के आनन्द में मतवाले अर्थात् विभोर रहते हैं.

19. मृतक औ साधु दोई एक सम जान सोई,
एक को कफन दूजे कफनी सु डारी है।
एक शमशान रहे दूजा बन माहिं रहे,
एक कभी बोले नाहिं दूजे मौन धारी है।
एक मर माटी होया दूजे अभिमान खोया,
एक आग जरे दूजे विरह जान जारी है।
कहे टेऊँ दोई जग आस ते निरास भये,
दोनों की समता हम अलप उचारी है।।

अर्थ : सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज कहते हैं कि मृतक और साधु को एक समान समझो. मुर्दो को कफन ओढ़ाया जाता है और साधु लंगोटी (कोपीन) धारण करता है, अथवा वह कफन (गेरु वस्त्र) को जीते जी अपने शरीर पर डालता है. मृत प्राणी को अन्त में श्मशान में ले जाया जाता है और दूसरे अर्थात् साधु श्मशान की तरह निर्जन एकान्त वन में निवास करता है. जिस प्रकार मृत प्राणी बोलता नहीं है, इसी प्रकार संत मौन धारण कर लेता है. दोनों ही नहीं बोलते हैं. वह अपने को खो देता है वह मरकर मिट्टी हो जाता है और दूसरा अर्थात् साधु अपने को आत्म स्वरूप में खो देता है समाप्त कर देता है. एक अग्नि से मरकर जलने में दूसरा संत अंहकार को मार देता है. ज्ञान की अग्नि और परमात्मा के वियोग में जलता है.

सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज कहते हैं, कि मृतक और साधु दोनों ही संसार की आशा से निराश होते हैं अर्थात् दोनों की समानता को अल्प शब्दों में उच्चारण कर रहे हैं अथवा बता रहे हैं.

सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित

सलोक माला

(श्री मुरारीलाल कटारिया, कोटा)

35. सतगुरु शाहनिशाहु, आहे धन गुण ज्ञान जो।
टेऊँ सत् उपदेश सां मेटे थो चित चाह।
मुक्ति करे थो जीव खे, डसे ज्ञान जी राह।
आनन्दु डई अथाहु, दुख करे सभु दूरि थो।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहते हैं कि सद्गुरु धन, गुण और ज्ञान के शहंशाह हैं. अर्थात् सद्गुरु के पास आत्म–धन का भंडार है, वे गुणों की खान हैं, उनके पास असीमित ज्ञान है. गुरुदेव सच्चा उपदेश देकर चित्त में उत्पन्न इच्छाओं को समाप्त कर देते हैं. फिर कभी कोई वासना उत्पन्न ही नहीं होती. सद्गुरु ज्ञान (आत्म ज्ञान) की राह दिखाकर जीव को मुक्ति प्रदान कराते हैं. उसके समस्त दुःखों (दैहिक, दैविक, भौतिक) दूर कर उसे अथाह आनन्द देते हैं. सद्गुरु मन में उत्पन्न इच्छाओं को समाप्त कर आत्म–बोध कराता है, जिससे दुःख दूर हो जाते हैं और आनन्द की अनुभूति होती है. अत: ऐसे सद्गुरु की शरण अवश्य ग्रहण करनी चाहिए कि मन मन की ममता, माया और कामनाओं की समाप्ति हो जाए.

36. सतगुर प्रेम पटी, मूँखे पाढ़ी प्रेम सां।
गुर मन्तरु डेई ज्ञान सां पापनि पाढ़ पटी।
बिरिह सन्दे बीमार जी कयाई मलम पटी।
टेऊँ अटपटी, गाल्हि डसियाई गुझ जी।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहते हैं कि सद्गुरु ने प्रभु के नाम की पट्टी मुझे बड़े प्रेम से पढ़ाई. सद्गुरु ने मुझ पर प्रेम दर्शा कर मुझे कृतार्थ कर दिया. मेरे मन में ईश्वर के प्रति अथाह प्रेम भर दिया. गुरुदेव ने मुझे पात्र समझकर 'नाम' का मंत्र दिया, जिससे मेरे पाप जड़ सहित नष्ट हो गए. गुरुदेव ने मेरे असाध्य रोग को जड़ से समाप्त कर दिया. अर्थात् मेरी दुर्वासनाओं को नष्ट कर दिया. यद्यपि उनकी बातें अटपटी लगती थीं, परन्तु उन्होंने गूढ़ की बातें बतलाकर मेरा मार्ग प्रशस्त किया. सद्गुरु ने न केवल मेरी अन्तर्मन इच्छाओं का दमन किया, बल्कि अस्वस्थ मन को आत्म ज्ञान से भर दिया. स्नेह से प्रेम का प्याला पिलाकर मतवाला कर दिया. इस हृदय में प्रभु के प्रति आस्था, श्रद्धा और विश्वास का प्रेम जगा दिया.

37. आहिनि भृंग समान, साधु हिन संसार में।
शबदु सुणाए ब्रह्म जो मेटिजि तन अभिमानु।
मेलिनि शुद्ध स्वरूप सां डेई आत्म ज्ञानु।
तनु मनु धनु कुर्बानु, कहे टेऊँ तिनि तां करियाँ।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहते हैं कि इस संसार में साधु भृङ्ग के समान हैं, जो ब्रह्म शब्द (भूँ–भूँ) सुनाकर तन के अभिमान से मुक्त कराते हैं. साधु–संत आत्मज्ञान देकर शुद्ध स्वरूप से मिला देते हैं. ऐसे साधु पर मैं अपना तन–मन–धन अर्थात् सर्वस्व अर्पित कर दूँ. उन पर अपना सब कुछ न्यौछावर कर दूँ. साधु के गुण अनेक हैं. साधु गुणों की खान है. श्री रामचरित मानस में भगवान श्रीराम ने अपने मुख से साधुओं के निम्न गुण बताये हैं– संत छ: विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर) को जीते हुए, पापरहित, कामनारहित, निश्चल, अकिञ्चन (सर्व त्यागी), बाहर–भीतर से पवित्र, सुख के धाम, असीम ज्ञानवान्, इच्छारहित, मिताहारी, सत्यनिष्ठ, विद्वान, योगी, दूसरों के मान देने वाला, धैर्यवान्, धर्म के ज्ञान व आचरण में अत्यंत निपुण होते हैं. स्वयं के गुण सुनने में सकुचाते हैं, दूसरों के गुण सुनकार हर्षाते हैं. प्रभु के चरणों में निष्कपट प्रेम होता है. वेद–पुराण का यथार्थ ज्ञान रहता है. सदा प्रभु की लीलाओं को गाते सुनते हैं. सन्तों में असीमित गुण होते हैं, उनको सरस्वती और वेद भी नहीं कह सकते. (अरण्यकांड)
ऐसे साधु संत भृङ्ग की भांति भूँ–भूँ करके ब्रह्म का ज्ञान कराकर भक्तजन के जीवन से अभिमान, अज्ञान का नाश कर आत्मज्ञान कराते हैं, जिससे उनका परमात्मा से मिलन होता है. ऐसे साधु ही सच्चा ज्ञान दे सकते हैं. भक्तजन उन पर सब कुछ न्यौछावर कर देना चाहता है.

38. आदेसिनि आरो, रख्यो अनुभव देश डे।
टेऊँ जगु जंजाल खां ख्यालु करे न्यारो।
खुदी छडे बेखुदि संदो चलनि सेचारो।
निसंगु थी नारो, हणनि अइनल हक जो।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहते हैं कि आदेसी (जोगी) अनुभव देश में (ईश्वर के चरण कमलों का ध्यान रखकर) प्रेम रखकर संसार के जंजालों का ध्यान नहीं करते, चिन्ता नहीं करते. वे सांसारिक पदार्थों से विरक्त रहते हैं. वे इच्छारहित, कामनारहित, मितहारी और सत्यनिष्ठ रहते हैं. उनका ध्यान सदैव श्रीचरणों में रहता है. उन्हें पूर्ण अनुभव है कि प्रभु–चरणों में आसक्ति होने से उनका कल्याण होगा, मानव जीवन सफल होगा. अत: अहंकार को त्यागकर, ईश्वर प्राप्ति के लिए नम्रता धारण करते हैं. वे प्रभु के गुणगान करने में मस्त रहते हैं. वे सांसारिक पदार्थों से निर्लिप्त होकर अनालहक (अहं ब्रह्मास्मि) का नारा लगाते हैं. सचे साधु, संत, योगी ईश्वर की भक्ति में इस प्रकार लीन हो जाते हैं, कि सम्पूर्ण सृष्टि के जीवन ईश्वरमय हो जाते हैं, उन्हें अपने मन में, हृदय में ईश्वर नज़र आता है. द्वैत से अद्वैत के भाव उत्पन्न होते हैं. अहंकार त्यागने के उपरांत ही उन्हें स्वयं में ईश्वर के दर्शन होते हैं. सचे साधु वही हैं, जिन्होंने अहंकार त्याग कर नम्रता धारण कर रखी है.

सद्‌गुरु श्री सांई टेऊराम जी महाराज
द्वारा रचित

राम नाम महिमा

राम महातम को लखे, राम महातम गूढ़।
कह टेऊँ बेअंत है, क्या जाने नर मूढ़।

कह टेऊँ नित कीजिये, राम नाम से प्रेम।
राम नाम के सम नहीं, जप तप संयम नेम।।

राम जपन में जीभ पुनि, कर पद दूखे नाहिं।
टेऊँ दाम न लगत कछु, क्यों नहिं जपते ताहिं।।

राम नाम की पत्रका, तात पढ़ो दिन रात।
कह टेऊँ गुरु ज्ञान ले, लख ले अपनी जात।।

राम नाम के प्रेम की, पाती पढ़ो हमेश।
कह टेऊँ मन शांति हो, छूटे ताप क्लेश।।

राम नाम उलटा जपे, बाल्मीक भये पार।
कह टेऊँ तुम ना तरहिं, सुलटा राम उच्चार।।

अर्ध राम का जाप जप, गज का भया उधार।
कह टेऊँ तुम ना तरहिं, पूरन राम पुकार।।

राम नाम सत्य वचन पुनि, मधुर न बोलत जोय।
टेऊँ दूजे जनम में, सो नर गूंगा होय।

राम भजन जंह होत है, तहां ब्राजत राम।
राम जहां सुख धाम तह, रहे न कलना काम।।

कर माला मन ध्यान धर, रसना से रट राम।
कह टेऊँ इस जाप से, पाओ हरि का धाम।।

कह टेऊँ संसार के, छोड़े सबहीं काम।
जागत, सोवत, राम जप, जो सत्‌चित सुख धाम।।

अंतर बाहर रैन दिन, भूलो ना हरिनाम।
जिह्वा मन वा प्रान से, कह टेऊँ रट राम।।

कलियुग में हरिनाम है, सब साधन का सार।
कह टेऊँ तिंह सुमर के, पाओ मोक्ष द्वार।।

रे मन राखो राम में, पूरन तुम विश्वास।
कह टेऊँ विश्वास से, होवे सब दुःख नास।।

राम भरोसा राख तुम, और भरोसा त्याग।
कह टेऊँ हरि शरण ले, खोलो अपना भाग।।

अमृत वर्षा

कृपया इनको पढ़कर सोचिये क्या हम अपने जीवन में इसमें से किसी एक वाक्य पर आचरण करते हैं?

1. बोल सको तो तुम सच बोलो, झूठ कभी तुम मत बोलो।
घोल सको तो अमृत घोलो, कड़वाहट तुम मत घोलो।।
2. करनी हो तो दीनदुःखी की, सेवा करने का लो प्रण।
कमा सको तो पुण्य कमाओ, पाप न हो तुमसे एक क्षण।।
3. बचा सको तो समय बचाओ, एक मिनट मत व्यर्थ करो।
निर्धन को दस पैसे मत दो, देकर काम समर्थ करो।।
4. दूजे को मुस्काने दे दो, तुम मुस्कानें मत छीनो।
बीन सको तो हीरे बीनो, कंकर पत्थर मत बीनो।।
5. लगा सको तो पेड़ लगाओ, रोज़ सबेरे पानी दो।
तुम से सबको लाभ मिले और नहीं किसी को हानि हो।।
6. उठना है तो जल्दी उठकर, उपवन जाकर सैर करो।
जला सको तो दीप जलाओ, अंधकार से बैर करो।।
7. जल्दी सोकर जल्दी उठते, वो पाते हैं समृद्धि।
तन और मन बलशाली होते, धन की होती अभिवृद्धि।।

—प्रेमप्रकाशी साधिका (निमाणी), कोलकत्ता

बोधकथा ध्यान या सेवा

एक बार ज्ञानेश्वर महाराज सुबह—सुबह नदी तट पर टहलने निकले. उन्होंने देखा कि एक लड़का नदी में गोते खा रहा है. नजदीक ही, एक सन्यासी आँखें मूँदे बैठा था. ज्ञानेश्वर महाराज ने तुरंत नदी में कूदे, डूबते लड़के को बाहर निकाला और फिर संन्यासी को पुकारा. संन्यासी ने आँखें खोलीं तो ज्ञानेश्वर बोले— 'क्या आपका ध्यान लगता है?' संन्यासी ने उत्तर दिया— 'ध्यान तो नहीं लगता, मन इधर—उधर भागता है.' ज्ञानेश्वर ने फिर पूछा— 'लड़का डूब रहा था, क्या आपको दिखायी नहीं दिया?' उत्तर मिला— 'देखा तो था, लेकिन मैं ध्यान कर रहा था.' ज्ञानेश्वर ने समझाया— 'आप ध्यान में कैसे सफल हो सकते हैं? प्रभु ने आपको किसी की सेवा करने का मौका दिया था. यही आपका कर्तव्य भी था. यदि आप पालन करते, तो ध्यान में भी मन लगता. प्रभु की सृष्टि, प्रभु का बगीचा बिगड़ रहा है. बगीचे का आनन्द लेना है, तो बगीचे को सँवारना सीखें.'

यदि आपका पड़ोसी भूखा सो रहा है और आप पूजा—पाठ करने में मस्त हैं, तो यह मत सोचिये कि आपके द्वारा शुभ कार्य हो रहा है; क्योंकि भूखा व्यक्ति उसकी की छवि है, जिसे पूजा—पाठ करके आप प्रसन्न करना या रिझाना चाहते हैं. क्या यह सर्वव्यापक नहीं है.

21 अक्टूबर जन्मोत्सव पर विशेष

मेरी स्मृति में

परम पूज्य सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज के कतिपय संस्मरण

(श्रद्धेय सद्गुरु शान्तिप्रकाशजी महाराज के श्रीमुख से सुने हुए)

जूतों का मेले में–

एक बार इधर कोरबा चाम्पा की तरफ जाना हुआ, पूज्य सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के सानिध्य में! हमने रास्ते में एक जगह देखा कि कई लोग झुंड बनाकर जा रहे थे, स्वामी जी ने पूछा– भाई, यह सब लोग ऐसे कहां जा रहे हैं, तो मालूम हुआ कि यह सब लोग किसी एक गाँव में जा रहे थे, उस गाँव में मेला लगा हुआ था, जिसे 'जूतों का मेला' कहते थे. पूछने पर पता चला कि गाँव में कोई सिद्ध महात्मा थे उनके ब्रह्मलीन होने के बाद उसके उत्तराधिकारी उस महात्मा के जूते से सबको आशीर्वाद देते थे, उसी आशीर्वाद को ग्रहण करने यहाँ प्रतिवर्ष 'जूते का मेला' लगाया जाता है. बाबा संत तो संत परन्तु उनका जूता भी धन्य है.

विनोबा भावे से मुलाकात–

एक बार इस दास को सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का नागपुर की तरफ कामठी में दर्शनों का सौभाग्य मिला, वहाँ हमें मालूम हुआ कि इधर पास में ही पूज्य विनोबा भावे जी भी विराजमान हैं. पूज्य सद्गुरु महाराज जी की इच्छा हुई कि विनोबा भावे जी से मिलने चलें. उस समय विनोबा जी मौन में थे. सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने मुझसे कहा कि विनोबा से हमारी ओर से कुछ प्रश्नोत्तर करो, तो हमने उनसे कई प्रश्नोत्तर किए. संतों को देखकर विनोबा जी अत्यंत प्रसन्न हुए. विनोबा जी से सत्संग ज्ञानचर्चा करके हम सभी पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के साथ पुन: कामठी व नागपुर की यात्रा पर निकल गए.

किस संत का संग करें–

हमारे सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज कहा करते थे कि जिस संत में ये तीन लक्षण हों उसका संग करना चाहिए. कौन से– पहला यह कि जिसमें पक्षपात न हो, दूसरा वह अभेदी हो, और तीसरा वह निर्मान हो अर्थात् जिसमें हठ (दुराग्रह) न हो. ऐसे महापुरुषों का संग करके उनसे आत्मज्ञान की शिक्षा प्राप्त कर अपना कल्याण करना चाहिए.

बद्रीनाथ में स्वामी सर्वानन्द जी–

एक बार हमारे सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज बद्रीनाथ की यात्रा पर गए. यात्रा के दौरान कुछ जिज्ञासुओं ने स्वामी जी से कुछ प्रश्नोत्तर किया– कि सांई! यह संसार क्या है?

उत्तर देते हुए स्वामी जी ने कहा– भाई! वस्तुत: यह मिट्टी, हवा आदि पञ्च तत्वों से निर्मित, परिवर्तनशील तथा एक स्वप्न की कहानी है. स्वामी जी का उत्तन सुनकर जिज्ञासुओं ने फिर पूछा– महाराज! यदि यह संसार ऐसे असार व बेबका (प्रतीत मात्र) है तो फिर लोगों ने इसमें अपना दिल क्यों लगाया है?

स्वामी जी– भाई, सुनिये, इसमें लोगों का भी दोष नहीं, फिर? आगे कहते हैं– या तो लोग सूरदास हैं.

जिज्ञासु– महाराज! सूरदास कैसे?

स्वामी जी– क्योंकि वे रोजाना देखते हैं कि आज अमुक आदमी चला गया, आज फलां आदमी चला गया, ऐसे रोज अपनी आँखों से देख भी रहे हैं, तो भी नहीं समझते, तो वे सूरदास ही हुए न?

नहीं महाराज, सूरदास तो नहीं हैं, सबके सब आँखों से सही हैं.

स्वामी जी– फिर शायद कानों से बहरे हैं. कैसे? अरे भाई, रोज संत, शास्त्र, गुरु ऊँचे ऊँचे आवाज में सत्संग कह रहे हैं– अरे बाबा, यह जीवन नश्वर है. हमें आज नहीं तो कल चलना है, देखो– कल फलां आदमी चला गया, आज अमुक व्यक्ति चला गया, ऐसे रोज बड़ी बड़ी आवाज देकर संत कह रहे हैं, तो भी यह जीव चेतता नहीं, इसलिए कि शायद ये कानों से बहरे हैं जो यह आवाज सुन नहीं पा रहा है.

नहीं महाराज, न तो ये आँखों से सूरदास हैं और न ही कानों से बहरे हैं, तो फिर जरूर ये लोग पागल हैं.

देखो– पागल आदमी क्या करता है– देखता भी है और सुनता भी है, किन्तु वह उसके अनुसार काम नहीं करता. उस पर विचार नहीं करता. अतएव या तो वे पागल हैं.

इस प्रकार स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने उन जिज्ञासुओं के प्रश्न के उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा को शांत किया.

यह प्रसङ्ग स्वयं स्वामी जी कभी कभी अपने मुख से सुनाया करते थे.

संकलन–प्रेमप्रकाशी दिलीप

अवतरण के उपलक्ष में

श्री स्वामी सर्वानन्द महिमा छन्द

(श्री स्वामी गुरुमुखदास महाराज विरचित)

स्वामी सर्वानन्द सुखदाई— सबको जानत लागत प्यारा है
पर उपकारी परम उदारी— परदुख काटन हारा है
क्षमा ज्ञान गुणों की खानी— भक्ति का भण्डारा है
गुरुमुखदास कहत है जिसकी— महिमा अपरम्पारा है

स्वामी सर्वानन्द सैलानी— सैर करत संसारा है
नगर नगर में नाद बजावे— ओऽम् करत उचारा है
सत्संग का दीबान लगावै— ज्ञान करत गजकारा है
कह गुरुमुख जग जीवन का नित बंधन काटन हारा है

स्वामी सर्वानन्द ब्रह्मज्ञानी— ब्रह्मज्ञान बतावत है
आत्म का नित दे उपदेशा— अपना आप लखावत है
जीव ईश दोनों इक रूपा— भेद जु भ्रम मिटावत है
भाग त्याग लक्षा कर स्वामी— भिन्न भिन्न कर समझावत है
गुरुमुखदास प्रकट करके पुनि— सर्व को ब्रह्म बतावत है

स्वामी सर्वानन्द समदर्शी— आत्म का पूजारी है
आत्म सब घट में इस देखत— ऐसी दृष्टि धारी है
आत्म की इक अमर आरती— ज्योति ज्ञान की बारी है
गुरुमुखदास श्री सतगुरु की— पूजा करता भारी है

स्वामी सर्वानन्द एकांती— शान्ति सब्र में रहते हैं
मन के संकल्प विकल्प सारे— योग अग्नि में दहते हैं
बहुत वचन कब बोलत नाहीं— थोड़े थोड़े कहते हैं
आतप शीत क्षुधा तृषादिक, सुख दुख शिर पर सहते हैं
गुरुमुख गंग किनारे जाकर— बांध के आसन बहते हैं

स्वामी सर्वानन्द है साचा— साची जांकी कहनी है
जैसे बोले तैसा करहैं— साची तांकी दहनी है
पूरा जां का आसन प्यारे— पूरी वां की बहनी है
गुरुमुख निन्दा गिला सहारे— सांची तांकी सहनी है

स्वामी सर्वानन्द पुनि सतगुरु— दोनों इस वपु जानो जी
इन दोनों के बीच प्यारे— भेद कभी नहीं आनो जी
ज्योति ज्योति में पलट पड़ी है— रूप गुरु का मानो जी
गुरुमुख इनसे ले निज ज्ञाना— आत्म को पहिचानो जी

स्वामी सर्वानन्द वैरागी— जग को जानत फानी है
सर्व त्यागी महा वैरागी— आत्म अंतर ध्यानी है
ब्रह्मनेष्ठी ब्रह्मश्रोत्री— पूर्ण ब्रह्मज्ञानी है
गुरुमुखदास कहे कर जोड़े— ब्रह्मज्ञान का दानी है

श्री सर्वानन्द महिमा दोहे

सिन्ध देश शाहभिट्ट में, आये धर अवतार।
सद्गुरु सर्वानन्द को, वन्दन बारम्बार।।

माता जिनकी ईश्वरी, पिता है चेलाराम।
पूर्व पुण्य ते पाइया, सद्गुरु टेऊँराम।।

नमो नमो गुरुदेव के, श्रीचरनन बलिहार।
दे सुमति संपति सगल, सर्वानन्द दातार।।

सर्वानन्द का अर्थ शुभ, जो आनन्द स्रोत।
ईर्द गिर्द जीवन पूरा, आनन्द ओतप्रोत।।

सर्वानन्द का ध्यान शुभ, जो जन करे सादर।
ताँका जीवन श्रेष्ठ पुनि, जग में हो आदर।।

११४वें जन्मोत्सव पर भावपूर्ण काव्याञ्जलि

कोटि कोटि श्रीचरणों में हम करते हैं नित वंदना

सिन्ध देश की महिमा भारी, वेदों ने सब भांति उचारी
उसके पावन तट पर आये, माँ ईश्वरी के नन्दना—
कोटि कोटि श्रीचरणों में हम करते हैं नित वन्दना.
शाहभिट्ट की शोभा न्यारी, भक्तों की यह भूमि प्यारी,
तिस नगरी में आये गुरुवर, करते हैं अभिनन्दना—
कोटि कोटि श्रीचरणों में हम करते हैं नित वन्दना.
बचपन में ही धर वैरागा, प्रभु चरणों में कर अनुरागा
जग जाल के तोड़ के तागे, किया गुरु को अर्पना—
कोटि कोटि श्रीचरणों में हम करते हैं नित वन्दना.
ब्रह्मनेष्ठी श्रोत्री ध्यानी, सद्गुरु सर्वानन्द ज्ञानी
ऐसे प्यारे गुरुवर के, पाद पंकज की अर्चना—
कोटि कोटि श्रीचरणों में हम करते हैं नित वन्दना.

—प्रेमप्रकाशी दिलीप

भगवद्विश्वास की अनोखी घटना

जीवन्मुक्त गृहस्थ

पं.श्री शिवराम किंकर जी स्वामी विवेकानन्द जी के विद्यागुरु थे. वे अद्वितीय विद्वान् थे और गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी निरन्तर ईश्वराधन में लगे रहते थे. दु:ख–सुख में उनकी समत्व– बुद्धि हो गयी थी. बड़े–बड़े विद्वान् भी उनकी विलक्षण प्रतिभा से चकित होकर उनका शिष्यत्व ग्रहण कर गौरव का अनुभव करते थे. अध्ययन–अध्यापन के साथ–साथ वे ध्यान योग की साधना में तल्लीन रहते थे. उनकी तन्मयता विचित्र थी. वे दु:सह अर्थाभाव, रुग्णता आदि भयावह प्रतिकूल परिस्थितयों में भी अचल, शान्त और सहिष्णु बने रहते थे. उनका भगवद्विश्वास अडिग था, जिससे वे असाधारण और धीर पुरुष कहे जाते थे. बराहनगर नामक ग्राम में उनका गृह था. विद्वता, सरलता, निरभिमानता एवं लोकरञ्जक मृदुल स्वभाव के कारण परिवार के एवं अन्य लोग उनके अनुकूल रहते थे. वे सदैव उनकी आज्ञाका पालन करते थे. स्वामी विवेकानन्द जी भी उनसे संस्कृत पढ़ा करते थे. तब उनका नाम 'नरेन्द्रदत्त' था और वे नवयुवक थे.

एक समय की बात है, अर्थाभाव के कारण पं. श्रीशिवराम किंकर जी के घर तीन दिनों तक चूल्हा नहीं जला. सारा परिवार भूख से व्याकुल हो रहा था. इस पर भी अध्यापन कार्य बंद नहीं हुआ और विद्यार्थी अध्ययन के लिये आते रहे. पं. श्रीशिवराम किंकर जी भी आनन्द और उत्साह के साथ विद्यार्थियों को पढ़ाते, शास्त्रों की विस्तृत व्याख्या करते और ज्ञान–चर्चा में मस्त रहते. किसी को जरा भी भान न हुआ कि पण्डित जी परिवार–सहित तीन दिन से निराहार हैं, क्योंकि उनके चेहरे पर विषाद और उदासीनता की छाया तक न थी.

आज तीसरा दिन था. सदा की भाँति आज भी पण्डित जी विद्यार्थियों को पढ़ाने में व्यस्त हो गये. उन्हीं छात्रों में नरेन्द्रदत्त भी थे. इसी समय डाकिया एक तार लेकर आया, जो पण्डित जी के नाम से था. पण्डित जी ने तार को खोला और उसे पढ़ने लगे. पढ़ते–पढ़ते उनकी आँखों से अश्रुधारा बह चली. वे बड़ी देर तक उस तार को मस्तक से लगाये रहे.

यह अनोखा दृश्य देखकर नरेन्द्रदत्त ने कौतुहलपूर्वक पूछा– 'बाबा! सामान्य कारण से हिमालय नहीं हिला करता. आज मैं आपकी विचित्र दशा देख रहा हूँ, जो आपकी आँखों से अश्रुधारा बह रही है और आप नित्य प्रफुल्लित रहने वाले धीर पुरुष होते हुए भी शोकाकुल दिखायी दे रहे हैं, मुझे आश्चर्य है. आपको इसका रहस्य समझाना ही होगा.'

पण्डितजी ने तार नरेन्द्रदत्त के हाथ में दे दिया. वह काशी से आया था. किसी अपरिचित शिवभक्त जमींदार ने दस रुपये तार से भेजे थे और लिखा था कि 'हमारे घर में शिवमूर्ति स्थापित है. रात्रि में शिवजी ने मुझसे कहा कि मैं तीन दिन से भूखा हूँ. मैंने तुम्हारी पूजा ग्रहण नहीं की है, क्योंकि मेरा परम भक्त पं. शिवराम किंकर बराहनगर में रहता है, वह तीन दिन से उपवास कर रहा है. उसके पास अन्नादि खरीदने के लिये रुपये नहीं हैं. तुम उसको तार से शीघ्र कुछ रुपये भेज दो. उसके भोजन करने के बाद ही मैं भोजन करूँगा. अत: मैं भगवान् शिवजी की आज्ञा से ये रुपये भेज रहा हूँ.'

इस अद्भुत घटना को पढ़कर नरेन्द्रदत्त को महान् आश्चर्य हुआ. शिवजी की कृपा का अद्भुत चमत्कार देखकर उनकी आँखों से भी प्रेम–नीर प्रवाहित होने लगा. वे रुँधे हुए गले से बोले– 'बाबा! मैं भी तो आपका ही शिष्य हूँ. आपने जब तीन दिन से कुछ भी भोजन नहीं किया तो मुझे क्यों नहीं बतलाया. मैं आपका सब प्रबन्ध कर देता. आप भूखे पेट पढ़ाते रहे और मैं पढ़ता रहा, यह तो महान् अपराध हो गया. इस अपराध का तो मुझे बड़ा भारी दण्ड मिलना चाहिये. मैं आपका दास हूँ, आपकी संतान हूँ एवं मुझ पर आपका अहैतुक स्नेह भी है, फिर आपने मुझसे यह बात गुप्त क्यों रखी.' ऐसा कहते हुए वे गुरु जी के चरणों पर गिर पड़े और फूट–फूटकर रोने लगे.

नरेन्द्रदत्त के प्रेम को देखकर पं. श्रीशिवराम किंकर जी गद्गद हो गये. उन्होंने नरेन्द्रदत्त को गले से लगाकर कहा– 'नरेन्द्र! घबराओ मत. जब हमारे पिता विद्यमान हैं, तब हम अपने पुत्रों से क्यों याचना करें? हमारे परम पिता, परम सुहृद्, सर्वज्ञ, भगवान् शंकर को हमारी सबसे अधिक चिन्ता है. हम लोगों को भोले बालक की तरह सदैव उनके आश्रित होकर निर्भय एवं निश्चिन्त रहना चाहिये. जब वे सर्वज्ञ सदैव सर्वत्र विद्यमान हैं, तब फिर हम अपने अभाव की बात और किससे कहें? उनके रहते हुए किसी दूसरे से याचना करना उनका अपमान करना है.'

भगवद्विश्वास की ऐसी अद्भुत और विचित्र बात सुनकर नरेन्द्रदत्त का विषाद मिट गया और उनके हृदय में प्रकाश छा गया. पं. श्रीशिवराम किंकर जी की जीवन्मुक्त स्थिति को देखकर सभी लोग आश्चर्यचकित थे. इस प्रकार भगवदाश्रित होकर निर्भय एवं निश्चिन्त रहना ही जीवन्मुक्ति है. पं. श्रीशिवराम किंकर जी महाराज ने आगे चलकर संन्यास ले लिया और वे योगत्रयानन्द जी के नाम से विख्यात हुए.

व्रत महिमा — अखण्ड सुहाग का प्रतिमान व्रत– करवा चौथ

भारतीय हिन्दू स्त्रियों के लिये 'करवा चौथ' का व्रत अखण्ड सुहाग को देने वाला माना जाता है. विवाहित स्त्रियाँ इस दिन अपने पति की दीर्घायु एवं स्वास्थ्य की मंगल कामना करके भगवान् रजनीश (चन्द्रमा)– को अर्घ्य अर्पित कर व्रत को पूर्ण करती हैं. स्त्रियों में इस दिन के प्रति इतना अधिक श्रद्धाभाव होता है कि वे कई दिन पूर्व से ही इस व्रत की तैयारी प्रारम्भ कर देती हैं. यह व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष की चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी को स्त्रियों द्वारा मनाया जाने वाला 'करवा चौथ' कहलाता है. यह सौभाग्यवती स्त्रियों के लिये पवित्र पर्व माना जाता है. शास्त्रों के अनुसार पतिव्रता स्त्रियों के लिये पति ही व्रत, पूजा–पाठ एवं ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि से श्रेष्ठ होता है. सौभाग्यवती स्त्री के लिये पति ही सर्वस्य है पतिव्रता स्त्रियों के लिये तीर्थ, व्रत, नियम, यज्ञ, पूजा आदि सब कुछ पतिदेव ही है. पति के सिवा स्त्रियों के लिये ऐसा कोई भी तीर्थ नहीं, जो इस लोक में सुख शान्ति देने वाला हो या परलोक में स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करने वाला हो. अर्थात् स्त्रियों के लिये पति ही परमेश्वर है. स्त्रियों के लिये उचित है कि वह सच्चे भाव से पति सेवा में प्रवृत होकर प्रतिदिन मन, कर्म, वचन, शरीर और क्रिया द्वारा पति का ही आह्वान करे और तत्पर होकर श्रेष्ठ भाव से सदा पतिदेव का पूजन करे. प्रतिदिन प्रातःकाल शीघ्र उठकर चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करे. अगर पतिदेव संतुष्ट रहते हैं तो समस्त देवी–देवता उस स्त्री पर सदैव प्रसन्न रहते हैं. इसी प्रकार सौभाग्यवती–पतिव्रता स्त्रियों को 'करवा चौथ' के दिन पति के स्वास्थ्य, दीर्घायु, विद्या, बल एवं मंगल कामना हेतु यह व्रत विधि विधान से रखना चाहिए. यह हर स्त्री का प्रथम धर्म है. इस व्रत के रखने के लिये शास्त्रानुसार स्त्रियों को प्रातःकाल स्नानादि के बाद घर–परिवार के बड़े बुजुर्ग, सास–ससुर व पतिदेव को प्रणाम करना चाहिए. तत्पश्चात् आचमन करके पति, पुत्र–पौत्र तथा सुख–सौभाग्य की इच्छा का संकल्प लेकर व्रत प्रारम्भ करना चाहिए.

इस दिन गणेश तथा चन्द्रमा के पूजन करने का विधान है. स्त्रियाँ पूरे दिन व्रत धारण कर चन्द्रोदय के बाद श्रृंगारित होकर चन्द्रमा के दर्शन कर अर्घ्य चढ़ाये तथा चलनी में दीप प्रज्ज्वलित कर चन्द्र–दर्शन के बाद अपने पति के दर्शन उस चलनी से करके उनकी चरण वन्दना करके प्रणाम करे. तत्पश्चात् पतिदेव के हाथ से जलार्घ्य लेकर व्रत पारण करके पतिदेव को भोजन खिलाकर स्वयं भोजनादि ग्रहण कर व्रत को पूर्ण करे. ऐसा करने से पति के दीर्घायु होने से स्त्री सौभाग्यवती होती है. परिवार में सुख–शान्ति व आरोग्यता रहती है, किसी भी प्रकार का कोई कष्ट–क्लेश नहीं होता. सास–ससुर व बड़े बुजुर्गों का उस स्त्री पर सदैव स्नेहिल आशीर्वाद बना रहता है.

कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की चौथ को केवल चन्द्रदेवता की ही पूजा नहीं होती, बल्कि शिव–पार्वती और स्वामि कार्तिकेय को भी पूजा जाता है. शिव–पार्वती की पूजा विधान इस हेतु किया जाता है कि जिस प्रकार शैलपुत्री पार्वती ने घोर तपस्या करके भगवान् शंकर को प्राप्त कर अखण्ड सौभाग्य प्राप्त किया वैसा ही उन्हें भी मिले. वैसे भी गौरी–पूजन का कुँआरी कन्याओं और विवाहिता स्त्रियों के लिये विशेष माहात्म्य है.

यह व्रत अनेक पतिव्रता स्त्रियों ने श्रद्धापूर्वक रखा था. भगवान श्रीकृष्ण के कथानुसार द्रोपदी ने भी 'करवा चौथ' व्रत रखकर महाभारत का युद्ध कौरवों से पाण्डवों ने जीता था. यह पवित्र व्रत सौभाग्य और शुभ संतान देने वाला भी माना जाता है. हर पतिव्रता स्त्री का धर्म है कि सुख–सौभाग्य में वृद्धि करने वालें इस व्रत को श्रद्धाभाव से रखकर अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी–समृद्ध व खुशहाल बनावें. इस सन्दर्भ में जो कथा शिवजी ने पार्वती को सुनायी थी, वह इस प्रकार है–

कथा : इन्द्रप्रस्थ नगरी में वेदशर्मा नामक एक विद्वान् ब्राह्मण के सात पुत्र तथा एक पुत्री थी जिसका नाम वीरावती था. उसका विवाह सुदर्शन नामक एक ब्राह्मण के साथ हुआ. ब्राह्मण के सभी पुत्र विवाहित थे. एक बार करवाचौथ के व्रत के समय वीरावती की भाभियों ने तो पूर्ण विधि से व्रत किया, किन्तु वीरावति सारा दिन निर्जल रहकर भूख न सह सकी तथा निडाल होकर बैठ गयी. भाइयों की चिन्ता पर भाभियों ने बताया कि वीरावती भूख से पीड़ित है. करवाचौथ का व्रत चन्द्रमा देखकर ही खोलेगी. यह सुनकर भाइयों ने बाहर खेतों में जाकर आग जलायी तथा ऊपर कपड़ा तानकर चन्द्रमा–जैसा दृश्य बना दिया, फिर जाकर बहन से कहा कि चाँद निकल आया है, अर्घ्य दे दो. यह सुनकर वीरावती ने अर्घ्य देकर खाना खा लिया. नकली चन्द्रमा को अर्घ्य देने से उसका व्रत खण्डित हो गया तथा उसका पति अचानक बीमार पड़ गया. वह ठीक न हो सका. एक बार इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी करवचौथ का व्रत करने पृथ्वी पर आयीं. इसका पता लगने पर वीरावती ने जाकर इन्द्राणी से प्रार्थना की कि उसके पति के ठीक होने का उपाय बतायें. इन्द्राणी ने कहा कि तेरे पति की यह दशा तेरी ओर से रखे गये करवाचौथ व्रत के खण्डित हो जाने के कारण हुई है. यदि तू करवाचौथ का व्रत पूर्ण विधि–विधान से बिना खण्डित किये करेगी तो तेरा पति ठीक हो जायगा. वीरावती ने करवाचौथ का व्रत पूर्ण विधि से सम्पन्न किया, फलस्वरूप उसका पति बिल्कुल ठीक हो गया. करवाचौथ का व्रत उसी समय से प्रचलित है.

—पथिक

पर्व—माङ्गल्य

धनतेरस

कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी 'धनतेरस' कहलाती है. इस दिन चाँदी का बर्तन खरीदना अत्यंत शुभ माना गया है, परंतु वस्तुत: यह यमराज से सम्बन्ध रखने वाला व्रत है. इस दिन सायंकाल घर के बाहर मुख्य दरवाजे पर एक पात्र में अन्न रखकर उसके ऊपर यमराज के निमित्त दक्षिणाभिमुख दीपदान करना चाहिये तथा उसका गन्धादि से पूजन करना चाहिये. दीपदान करते समय निम्नलिखित प्रार्थना करनी चाहिये—

मृत्युना पाशहस्तेन कालेन भार्यया सह।
त्रयोदश्यां दीपदानात्सूर्यजः प्रीयतामिति।।

यमुनाजी यमराज की बहन हैं इसलिये धनतेरस के दिन यमुना स्नान का भी विशेष माहात्म्य है. यदि पूरे दिन का व्रत रखा जा सके तो अत्युत्तम है, किंतु संध्या के समय दीपदान अवश्य करना चाहिये—

कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे।
यमदीपं बहिर्दद्यादपमृत्युर्विनश्यति।।

कथा : एक बार यमराज ने अपने दूतों से कहा कि तुम लोग मेरी आज्ञा से मृत्युलोक के प्राणियों के प्राण हरण करते हो, क्या तुम्हें ऐसा करते समय कभी दु:ख भी हुआ है या कभी दया भी आयी है? इस पर यमदूतों ने कहा— महाराज! हम लोगों का कर्म अत्यंत क्रूर है परंतु किसी युवा प्राणी की असामयिक मृत्यु पर उसका प्राण हरण करते समय वहाँ का करुणक्रंदन सुनकर हम लोगों का पाषाण हृदय भी विगलित हो जाता है. एक बार हम लोगों को एक राजकुमार के प्राण उसके विवाह के चौथे दिन ही हरण करने पड़े. उस समय वहाँ का करुणक्रन्दन चीत्कार और हाहाकार देख—सुनकर हमें अपने कृत्य से अत्यंत घृणा हो गयी. उस मङ्गलमय उत्सव के बीच हम लोगों का यह कृत्य अत्यंत घृणित था, इससे हम लोगों का हृदय अत्यंत दु:खी हो गया. अत: हे स्वामिन्! कृपा करके कोई ऐसी युक्ति बताइये जिससे ऐसी असामयिक मृत्यु न हो.

इस पर यमराज ने कहा कि जो धनतेरस के पर्व पर मेरे उद्देश्य से दीपदान करेगा, उसकी असामयिक मृत्यु नहीं होगी.

दीपावली

भारतवर्ष में मनाये जाने वाले सभी त्योहारों में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टियों से अप्रतिम महत्त्व है. सामाजिक दृष्टि से इस पर्व का महत्त्व इसलिये है कि दीपावली आने से पूर्व ही लोग अपने घर—द्वार की स्वच्छता पर ध्यान देते हैं, घर का कूड़ा—करकट साफ करते हैं, टूट—फूट सुधरवाकर घर की दीवारों पर सफेदी, दरवाजों पर रंग—रोगन करवाते हैं, जिससे उस स्थल की न केवल आयु ही बढ़ जाती है, बल्कि आकर्षण भी बढ़ जाता है. वर्षा—ऋतु में आयी अस्वच्छता का भी परिमार्जन हो जाता है.



दीपावली के दिन धन—सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी भगवती महालक्ष्मी की पूजा करने का विधान है. शास्त्रों का कथन है कि जो व्यक्ति दीपावली को दिन—रात जागरण करके लक्ष्मी की पूजा करता है, उसके घर लक्ष्मी जी का निवास होता है. जो आलस्य और निद्रा में पड़कर दीपावली यूँ ही गँवाता है, उसके घर से लक्ष्मी रूठकर चली जाती है.

ब्रह्मपुराण में लिखा है कि कार्तिक की अमावस्या को अर्धरात्रि के समय लक्ष्मी महारानी सद्गृहस्थों के घर में जहाँ—तहाँ विचरण करती हैं. इसलिये अपने घर को सब प्रकार से स्वच्छ, शुद्ध और सुशोभित करके दीपावली तथा दीपमालिका मनाने से लक्ष्मी जी प्रसन्न होती हैं और वहाँ स्थाई रूप से निवास करती हैं. यह अमावस्या प्रदोषकाल से आधी रात तक रहने वाली श्रेष्ठ होती है. यदि आधी रात तक न भी रहे तो प्रदोषव्यापिनी दीपावली मनानी चाहिये.

प्राय: प्रत्येक घर में लोग अपने रीति—रिवाज के अनुसार गणेश—लक्ष्मी पूजन तथा द्रव्यलक्ष्मी पूजन करते हैं. कुछ स्थानों में दीवार पर अथवा काष्ठपट्टिका पर खड़िया मिट्टी तथा विभिन्न रंगों द्वारा चित्र बनाकर या पाटे पर गणेश—लक्ष्मी की मूर्ति रखकर कुछ चाँदी आदि के सिक्के रखकर इनका पूजन करते हैं तथा थाली में तेरह अथवा छब्बीस दीपकों के मध्य तेल से प्रज्वलित चौमुखा दीपक रखकर दीपमालिका का पूजन भी करते हैं और पूजा के अनन्तर उन दीपों को घर के मुख्य—मुख्य स्थानों पर रख देते हैं. चौमुखा दीपक रात भर जले ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये.

श्री महालक्ष्मी दीपावली पूजन

दिनांक ५ नवम्बर, २०१० शुक्रवार को प्रदोषव्यापिनी अमावस्या होने से इसी दिन दीपावली मनाई जाएगी. लक्ष्मी पूजन का समय इस प्रकार रहेगा—

सायं 5:45 से रात्रि 10:27 तक विशेष शुभ मुहूर्त है, इसके पश्चात् रात्रि 12:37 से 2:49 तक स्थिर लग्न का विशेष उत्तम मुहूर्त है. इस समय श्री लक्ष्मी जी भक्तों के घरों में प्रवेश करती हैं. व्यवसायिक प्रतिष्ठानों में दोपहर 12 बजकर 18 मिनट से ही पूजन प्रारम्भ हो जायेगा.

लक्ष्मीप्राप्ति के लिए सिद्ध मंत्र (गणपति स्तोत्र)

ॐ नमो विघ्नराजाय सर्वसौख्यप्रदायिने। दुष्टारिष्टविनाशाय पराय परमात्मने।।
लम्बोदरं महावीर्यं नागयज्ञोपशोभितम्। अर्धचन्द्रधरं देवं विघ्नव्यूहविनाशनम्।।
ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः हेरम्बाय नमो नमः। सर्वसिद्धप्रदोऽसि त्वं सिद्धिबुद्धिप्रदो भव।।
चिन्तितार्थप्रदस्त्वं हि सततं मोदकप्रियः। सिन्दूरारुणवस्त्रैश्च पूजितो वरदायकः।।
इदं गणपतिस्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान् नरः। तस्य देहं च गेहं च स्वयं लक्ष्मीर्न मुञ्चति।।

जो मनुष्य भक्ति—भाव से युक्त होकर इस गणपतिस्तोत्र का पाठ करता है, स्वयं लक्ष्मी उसके देह—गेह को नहीं छोड़ती.

श्री लक्ष्मी चालीसा

दोहा : मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में बास।
मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस।।
सरोठा : यही मोर अरदास, हाथ जोड़ विनती करूँ।
सबविधि करौ सुवास, जयजननि जगदम्बिका।।

।। चौपाई ।।

सिन्धु सुता मैं सुमिरों तोही। ज्ञान बुद्धि विधा दो मोही।।
तुम समान नहीं कोई उपकारी। सब विधि पुरबहु आस हमारी।।
जै जै जै जननी जगदम्बा। सबकी तुम ही हो अवलम्बा।।
तुम ही हो सब घट घट की वासी। विनती यही हमारी खासी।।
जग जननी जय सिन्धु कुमारी। दीनन की तुम हो हितकारी।।
बिनवो नित्य तुमहिं महारानी। कृपा करौ जग जननि भवानी।।
केहि विधि स्तुति करौं तिहारी। सुधि लीजै अपराध बिसारी।।
कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी। जग जननी विनती सुन मोरी।।
ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता। संकट हरो हमारी माता।।
क्षीर सिन्धु जब विष्णु मथायो। चौदह रत्न सिन्धु में पायो।।
चौदह रत्न में तुम सुखरासी। सेवा कियो प्रभु बन दासी।।
जब जब जन्म प्रभु जहां लीन्हा। रूप बदल तहं सेवा कीन्हा।।
स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा। लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा।।
तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं। सेवा कियो हृदय पुलकाहीं।।
अपनाया तोहि अन्तर्यामी। विश्व विदित त्रिभुवन की स्वामी।।
तुम सम प्रबल शक्ति नहिं आनि। कहंलौ महिमा कहौं बखानी।।
मन क्रम वचन करै सेवकाई। मन इच्छित वांछित फल पाई।।
तजि छल कपट और चतुराई। पूजहिं विविध भाँति मनलाई।।
और हाल मैं कहौं बुझाई। जो यह पाठ करै मन लाई।।
ताको कोई कष्ट न होई। मन इच्छित पावै फल सोई।।
त्राहि त्राहि जय दुःख निवारिणी। त्रिविध ताप भव बंधन हारिणी।।
जो यह पढ़े और पढ़ावे। ध्यान लगाकर सुनै सुनावै।।
ताको कोई न रोग सतावै। पुत्रादि धन सम्पत्ति पावै।।
पुत्रहीन अरु संपत्तिहीना। अन्ध बधिर कोढ़ी अति दीना।।
विप्र बोलाय कै पाठ करावै। शंका दिल में कभी न लावै।।
पाठ करावै दिन चालीसा। ता पर कृपा करैं गौरीशा।।
सुख सम्पति बहुत सी पावै। कमी नहीं काहु की आवै।।
बारह मास करै जो पूजा। तेहि सम धन्य और नहिं दूजा।।
प्रतिदिन पाठ करै मन माहीं। उन सम कोई जग में कहुं नाहीं।।
बहुविधि क्या मैं करौं बड़ाई। लेय परीक्षा ध्यान लगाई।।
करि विश्वास करै व्रत नेमा। होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा।।
जय जय जय लक्ष्मी भवानी। सब में व्यापित हो गुण खानी।।
तुम्हारो तेज प्रबल जग माहीं। तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहीं।।
मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै। संकट काटि भक्ति मोहिं दीजै।।
भूल चूक करि क्षमा हमारी। दर्शन दीजै दशा निहारी।।
बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी। तुमहि अक्षत दुःख सहते भारी।।
नहिं मोहिं ज्ञान बुद्धि है तन में। सब जानत हो अपने मन में।।
रूप चतुर्भुज करके धारण। कष्ट मोर अब करहु निवारण।।
केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई। ज्ञान बुद्धि मोहि नहिं अधिकाई।।

दोहा : त्राहि त्राहि दुख हारिणी, हरो वेगि सब त्रास।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो दुश्मन का नाश।।
रामदास धरि धन नित, विनय करत कर जोर।
मात लक्ष्मी दास पर, करहु दया की कोर।।

विष्णुप्रिया लक्ष्मी कहाँ निवास करना पसंद करती हैं...

यह विश्वास है कि दीपावली की रात्रि में विष्णुप्रिया लक्ष्मी सद्गृहस्थों के घरों में विचरण कर यह देखती हैं कि हमारे निवास योग्य घर कौन–कौन से हैं? और जहाँ–कहीं उन्हें अपने निवास की अनुकूलता दिखायी पड़ती है, वहाँ रम जाती है. अतएव मानव को आज के दिन अपना घर ऐसा बनाना चाहिये जो भगवती लक्ष्मी के मनोनुकूल हो और जहाँ पहुँचकर वे अन्यत्र जाने का विचार भी अपने मन में न लायें. भगवती लक्ष्मी को कौन–कौन सी वस्तुएँ प्रिय अथवा अप्रिय हैं इसका विवेचन अतीव कुशलतापूर्वक महाभारतादि ग्रंथों में किया गया है. महाभारत में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि घर की स्वच्छता, सुन्दरता और शोभा तो भगवती लक्ष्मी के निवास की प्राथमिक आवश्यकता है ही, साथ ही उन्हें ये सब भी अपेक्षित हैं. जैसा कि देवी रुक्मिणी के यह पूछने पर कि हे देवि! आप किन–किन स्थानों पर रहती हैं, तथा किन–किन पर कृपा कर उन्हें अनुग्रहीत करती हैं? स्वयं देवी लक्ष्मी बताती हैं–

वसामि नित्यं सुभगे प्रगल्भे दक्षे नरे कर्मणि वर्तमाने।
अक्रोधने देवपरे कृतज्ञे जितेन्द्रिये नित्यमुदीर्णसत्त्वे।।
स्वधर्मशीलेषु च धर्मवित्सु वृद्धोपसेवानिरते च दान्ते।
कृतात्मनि क्षान्तिपरे समर्थे क्षान्तासु दान्तासु तथाबलासु।।
वसामि नारीषु पतिव्रतासु कल्याणशीलासु विभूषितासु।

(महा०, अनु० दानधर्मपर्व ११/६, १०, १४)

(इसी प्रकार एक बार महालक्ष्मी ने भक्त प्रह्लाद को बताया कि तेज, धर्म, सत्य, व्रत, बल एवं शील आदि मानवी गुणों में मेरा निवास रहता है. इन गुणों में भी शील अथवा चारित्र्य मुझे सर्वाधिक प्रिय है. मैं शीलवान् पुरुषों का वरण करती हूँ. (महा० शान्ति० १२४)

(ऐसे ही एक बार लक्ष्मी ने राजा बलि का परित्याग कर दिया था. इसका कारण देवराज इन्द्र को बताते हुए लक्ष्मी जी ने कहा– सत्य, दान, व्रत, तपस्या, पराक्रम एवं धर्म जहाँ वास करते हैं, वहाँ मेरा निवास रहता है.)(महा०, शान्ति० २२५)

अर्थात् मैं उन पुरुषों के घरों में सतत निवास करती हूँ, जो सौभाग्यशाली, निर्भीक, सच्चरित्र तथा कर्तव्यपरायण हैं. जोअक्रोधी, भक्त, कृतज्ञ, जितेन्द्रिय तथा सत्वसम्पन्न होते हैं. जो स्वभावत: निज धर्म, कर्तव्य तथा सदाचरण में सतर्कता पूर्वक तत्पर होते हैं. धर्मज्ञ और गुरुजनों की सेवा में सतत निरत रहते हैं. मन को वश में रखने वाले, क्षमाशील और सामर्थ्यशाली हैं. इसी प्रकार उन स्त्रियों के घर प्रिय हैं जो क्षमशील, जितेन्द्रिय, सत्य पर विश्वास रखने वाली होती हैं तथा जिन्हें देखकर सबका चित्त प्रसन्न हो जाता है. जो शीलवती, सौभाग्यवती, गुणवती, पतिपरायणा, सबका मङ्गल चाहने वाली तथा सद्गुण सम्पन्न होती हैं.

भगवती लक्ष्मी किन व्यक्तियों के घरों को छोड़कर चली जाती हैं, इस विषय में स्वयं देवी रुक्मिणी से कहती हैं–

नाकर्मशीले पुरुषे वसामि न नास्तिके साङ्करिके कृतघ्ने।
न भिन्नवृत्ते न नृशंसवर्णे न चापि चौरे न गुरुष्वसूये।।
ये चाल्पतेजोबलसत्त्वमाना: क्लिश्यन्ति कुप्यन्ति च यत्र तत्र।
न चैव तिष्ठामि तथाविधेषु नरेषु संगुप्तमनोरथेषु।।

(महा० अनु० दान० ११/७–८)

जो पुरुष अकर्मण्य, नास्तिक, वर्णसङ्कर, कृतघ्न, दुराचारी, क्रूर, चोर तथा गुरुजनों के दोष देखने वाला हो, उसके भीतर मैं निवास नहीं करती हूँ. जिनमें तेज, बल, सत्त्व और गौरव की मात्रा बहुत थोड़ी है, जो जहाँ–तहाँ हर बात में खिन्न हो उठते हैं, जो मन में दूसरा भाव रखते हैं और ऊपर से कुछ और ही दिखाते है, ऐसे मनुष्यों में मैं निवास नहीं करती हूँ.

इसी प्रकार उन स्त्रियों के घर भी मुझे प्रिय नहीं– अर्थात् जो नारियाँ अपने गृहस्थी के सामानों की चिन्ता नहीं करतीं, बिना सोचे–विचारे काम करती हैं, पति के प्रतिकूल बोलती हैं, पराये घर में अनुराग रखती हैं, निर्लज्ज, पापकर्म में रुचि रखने वाली, अपवित्र, चटोरी, अधीर, झगड़ालू तथा सदा सोने वाली हैं, ऐसी स्त्रियों को छोड़कर मैं चली जाती हूँ.

उपर्युक्त गुणों का अभाव होने पर अथवा दुर्गुणों की विद्यमानता होने पर भले ही कितने ही सँभाल के साथ लक्ष्मी–पूजन किया जाय, भगवती लक्ष्मी का निवास उनके गृह में नहीं हो सकता.

दीपावली की एक प्रचलित कथा इस प्रकार भी है–

एक बार मुनियों ने सनत्कुमार जी से पूछा– भगवन्! दीपावली

लक्ष्मी–पूजा का पर्व है, फिर लक्ष्मी–पूजा के साथ अन्यान्य देवी–देवताओं की पूजा का महत्त्व क्यों प्रतिपादित किया गया है? सनत्कुमार जी ने बताया– राजा बलि का प्रताप जब समस्त भुवनों में फैल गया और उसने सभी देवताओं को बन्दी बना लिया था. उसके कारागार में लक्ष्मी सहित सभी देवी–देवता बंद थे. कार्तिक कृष्णपक्ष की अमावस्या को वामनरूपधारी भगवान् विष्णु ने जब बलि को बाँध लिया और सब देवी–देवता उसके कारागार से मुक्त हुए, तब सबने क्षीरसागर में जाकर शयन किया था. इसलिये दीपावली के दिन लक्ष्मी के साथ उन सब देवताओं का पूजन कर उन सबके शयन का अपने घर में उत्तम प्रबन्ध करना चाहिये, जिससे वे लक्ष्मी के साथ वहीं निवास करें, कहीं और न जायें. नयी शय्या, नया बिस्तर, कमल आदि से सुसज्जित कर लक्ष्मी को शयन कराना चाहिये जो इस विधि से लक्ष्मी–पूजन करते हैं, लक्ष्मी उनके यहाँ स्थिर भाव से निवास करती हैं.

आरोग्य सम्बन्धी दोहे

1. शीतल जल में डालकर सौंफ गलाओ आप।
मिश्री के संग पान करि मिटे दाह–संताप।।
2. फटे विमाई या मुँह फटे, त्वचा खुरदरी होय।
नीबू–मिश्रित आँवला सेवन से सुख होय।।
3. सौंफ इलायची गर्मी में लौंग सर्दी में खाय।
त्रिफला सदाबहार है, रोग मुक्त हो जाय।।
4. वात–पित्त जब–जब बढ़े पहुँचावे अति कष्ट।
सोंठ आवला, दाख संग खावे पीड़ा नष्ट।।
5. नीबू के छिलके सुखा बना लीजिये राख।
मिटे वमन मधु संग ले बड़े वैद्य की साख।।
6. लौंग इलायची चाबिये, रोजाना दस पाँच।
हटे श्लेष्मा कण्ठ का रहो स्वस्थ है साँच।।
7. स्याह नौन हरड़े मिला इसे खाइये रोज।
कब्ज गैस क्षण में मिटै सीधी–सी है खोज।।
8. पत्ते नागरबेल के हरे चबाये कोय।
कण्ठ साफ–सुथरा रहे रोग भला क्यों होय।।
9. खाँसी जब–जब भी करे, तुमको अति बैचेन।
सिंकी हींग अरु लौंग से मिले सहज ही चैन।।
10. छल–प्रपंच से दूर हो जग–मंगल की चाह।
आत्मनिरोगी जन वही गहे सत्य की राह।।

सद्गुरु टेऊँराम द्वारा रचित भोजन विधि दोहे

1. सात्विक स्वल्प नेम से, जो जन करत अहार।
तांको रोग न लागहीं, टेऊँ देह मंझार।।
2. काम क्रोम मद मोह से, चहत मुक्ति जो मीत।
थोरा भोजन खाय के, कर जिह्वा पर जीत।।
3. जिह्वा जीते होत है, मन इन्द्रियों पर जीत।
कह टेऊँ सत् बात यह, राखो मन प्रतीत।।
4. रसना रस से होत है, टेऊँ रोग अनेक।
बचना चाहो रोग से, तजो रसन की टेक।।
5. शुद्ध भोजन से विशुद्ध मन, शुद्ध मन में हो ज्ञान।
कह टेऊँ निज ज्ञान से, निश्चय हो कल्यान।।
6. भोजन तन सुख हेत है, दुःख के कारण नाहिं।
टेऊँ जांसे दुःख बढ़े, मत खाओ तुम ताहिं।।
7. चिकना भोजन देख के, पेट भरे जो खात।
कह टेऊँ वह मनुष नहिं, जान पशू तिंह तात।।
8. चिकना भोजन जो चहे, तांसे भक्ति न होय।
टेऊँ सात्विक खाय जो, भक्ति कमावे सोय।।
9. एक बार भोजन करे, महा पुरुष सो जान।
करे अल्प पुन बार दो, टेऊँ सो बुद्धिमान।।
10. बहु भोजन जो करत है, आयू हो तिस खीन।
कह टेऊँ सो होत है, पापी दुखिया दीन।।
11. भोजन बहुत न कीजिये, टेऊँ सुनिये लोय।
बहुत खान से बुद्धि घटे, आलस निद्रा होय।।
12. ठूंस ठूंस कर कंठ तक, खावत मूर्ख लोक।
कह टेऊँ वे भोगते, पेट शूल मन शोक।।
13. भूख समय भोजन करे, प्यास समय जल लेत।
कह टेऊँ सुख पाय सो, धर हृदय में चेत।।
14. मांस खान में पाप बहु, मत को खावे ताहिं।
कह टेऊँ जो खात है, जावत नर्कों माहिं।।
15. मांस अहार न मनुष्य का, खाते पशू अजान।
कहे टेऊँ इस खान से, होवे बुद्धि मलीन।।
16. बैल अश्व बानर गधा, मांस न खावत घास।
टेऊँ मानुष होय के, क्यों तुम खावत मांस।।
17. दूर नगर से करत सब, टेऊँ गोर मसान।
मांस अहारी पेट घर, करत गोर शमशान।।
18. एक वर्ष भी नेम से, जो शुद्ध करत अहार।
कह टेऊँ सो देह में, पावत ओज अपार।।

ज्ञानमार्ग

मन दीजिये सद्गुरु को

मानवता और अष्टावक्र

राजा जनक के मन में ज्ञान प्राप्त करने की कामना हुई. राजा जनक तो ज्ञानी थे ही, किंतु उन्हें किसी गुरु से ज्ञान की उपलब्धि नहीं हुई थी. ज्ञानी राजा जनक 'ज्ञानी गुरु' की खोज में चकराने लगे, किंतु वे थे प्रख्यात राजा. उन्हें एक उपाय सूझा. उन्होंने सर्वत्र यह डंका पिटवा दिया कि जो कोई मुझे 'ज्ञान' का उपदेश देगा, उसे मनमाना धन प्राप्त होगा और यदि वह ज्ञानी ज्ञान का उपदेश न दे सकेगा तो वह जनक के बंदीगृह में बंद होकर रहेगा. हां, उसे बंदीगृह की यातना नहीं भुगतनी पड़ेगी, प्रत्युत सुख के सभी साधन उसे बंदीगृह में ही प्राप्त होंगे. जनक की तथोक्त घोषणा को सुन–सुनकर बहुतेरे ज्ञानी जनक की सभा में पहुंचे, परंतु ज्ञानी जनक को समुचित ज्ञान का उपदेश न कर सके, फलत: बहुतों को जनक के बंदीगृह में सुखभोग के लिये जाना पड़ा.

एक बार अष्टावक्र के पिता भी ज्ञान देने के लोभ में या धन प्राप्त करने के चक्कर में जनक की सभा में पहुंचे. उन्हें भी हार मानकर जनक के बंदीगृह में बंद होना पड़ा. जब यह समाचार अष्टावक्र जी को अवगत हुआ, तब वे भी जनक की सभा में पहुंचे. राज दरबार में सुन्दर–सुन्दर शरीर वाले दरबारी लोग सुन्दर–सुन्दर आभूषणों से सुसज्जित थे, राजा जनक स्वयं राजसी ठाट–बाट से राजसभा में विराजमान थे. उसी समय अष्टावक्र महाराज पहुंचे. ऋषिकुमार अष्टावक्र के अङ्ग आठ स्थानों पर टेढ़े थे. मानव की यह दुर्बलता है कि वह ब्रह्मा के विधान में भी अपनी टांग अड़ाता है. अष्टावक्र के शरीर को टेड़ा–मेढ़ा देखकर सभासदों को हंसी आ गयी. सबकी हंसी से सभा में ठहाके की आवाज गूंज गयी. जहां 'ज्ञान' की चर्चा के लिये सभा जुड़ी हो, वहां शरीर की बनावट देखकर हंसना मानव की मानवता नहीं, प्रत्युत दुर्बलता कही जायेगी. ऋषिकुमार अष्टावक्र सभासदों के अनुचित व्यवहार से विचलित नहीं हुए. ज्ञानियों के लिये मान, अपमान सब समान ही होता है. अष्टावक्र आये थे ज्ञान की चर्चा करने और विजय प्राप्त करने. अष्टावक्र ने सभासदों की हंसी का उत्तर और अधिक ठहाके की हंसी से दिया. अष्टावक्र को उतना जोर से हसंते देख राजा जनक ने ऋषिकुमार से पूछा– 'महाराज! आप क्यो हंस रहे हैं?'

अष्टावक्र ने कहा– 'राजन्! यह प्रश्न तो मुझे ही करना चाहिये था.'

राजा जनक ने पूछा– 'क्यों?'

अष्टावक्र ने कहा– 'आप लोग मेरे पहुंचते ही हंसे थे.' उत्तर में राजा जनक ने कहा कि 'आपके टेढ़े–मेढ़े शरीर को देखकर हम लोगों को हंसी आ गयी, आपको दु:ख नहीं मानना चाहिये.'

ऋषिकुमार ने कहा– 'दु:ख की बात क्या है? हां, मुझे तो आप लोगों के आन्तरिक शरीर के ऊपर हंसी आयी. आप लोगों के सुन्दर शरीर के भीतर कितनी कलुषता भरी पड़ी है, उसे देखकर मुझे इतनी जोर की हंसी आयी. भला, मिथिला नरेश, जिनकी सभा में 'ज्ञान' की चर्चा होती है, ज्ञान प्राप्त करने के लिये जिन नरेश ने डंका पिटवाया है, उनके सभासद् तथा स्वयं वे भी शरीर के रूप, रंग, बनावट के प्रेमी हैं. उनके यहां 'ज्ञान' की बात कहां, नश्वर शरीर की महत्ता है.' अष्टावक्र के इस कथन से राजा जनक चुप हो गये और सभासदों को काटो तो खून नहीं. सब मौन हो गये. सभी स्तब्ध रह गये.

* * * * *

राजा जनक के अन्त:पुर में ऋषिकुमार की खूब सेवा–शुश्रूषा हुई. स्नान–ध्यान के बाद उन्हें भोजन कराया गया. शयन करने के बाद राजा जनक भी शयन करने गये, किंतु उन्हें नींद कहां? बालक अष्टावक्र की टेढ़ी बात उनके मस्तिष्क में झंझावात उत्पन्न कर रही थी. 'राजा जनक के यहां ज्ञान की नहीं, नश्वर शरीर के रूप, रंग, बनावट की महत्ता है' यह वाक्य उन्हें बैचेन किये हुए था. राजा जनक उठे और अष्टावक्र के पास पहुंचे. राजा जनक ने हाथ जोड़कर कहा– 'ऋषिकुमार! मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि आप मुझे 'ज्ञान' प्रदान कर सकते हैं.' राजा जनक ने पुन: कहा– 'ब्रह्मचारिन्! शीघ्रता से मुझे 'ज्ञान' प्रदान कीजिये. मेरा चित्त उद्विग्न हो रहा है.' ऋषिकुमार ने पुन: हंसकर कहा– 'राजन्! बिन कुछ गुरु दक्षिणा दिये ही 'ज्ञान' प्राप्त करना चाहते हो? जिस 'ज्ञान' की उपलब्धि जंगलों की खाक सहस्रों वर्षों तक छानने पर कहीं होती है, उसे एक राजा सहज में ही प्राप्त करना चाहता है.'

राजा जनक ने अनुनय के साथ कहा– 'ऋषिकुमार! मेरा खजाना आप ले लें और मुझे 'ज्ञान' का उपदेश करें.' ऋषिकुमार ने पुन: हंसकर कहा– 'राजन्! कोष क्या आपका है? कोष तो प्रजा का है तथा वह कोष राज्य के अधीन है' राजा यह तर्क सुनकर लज्जित हो गये और पुन: उन्होंने कहा– 'अच्छा महाराज! राज्य

ही आप ले लें.' अष्टावक्र ने पुनः उत्तर दिया—'राजन्! राज्य भी अनित्य है.' राजा जनक ने पुनः अनुरोध किया—'यह मेरा शरीर ले लीजिये.' ऋषिकुमार ने पुनः कहा—'शरीर तो मन के अधीन है.' राजा जनक ने कहा—'तो आप मन ही ले लीजिये.' अष्टावक्र स्वीकृति देते हुए बोले—'हां, मन ले सकता हूं. मन मुझे संकल्प कर दीजिये.' राजा जनक ने वैसा ही किया.

अष्टावक्र ने कहा—'राजन्! एक सप्ताह पश्चात् पुनः आऊंगा, तब आपकी मनःकामना पूर्ण होगी.' यह कहकर अष्टावक्र जी अपने पिता को लेकर घर पहुंचा आये और जाते समय राजा से कहते गये कि 'आप यह समझ लें कि आपने अपना मन मुझे संकल्प कर दिया है.' राजा जनक प्रतिज्ञाबद्ध हो गये और उनकी दशा विचित्र हो गयी. चलते—फिरते उन्हें यही ध्यान रहता कि मन तो संकल्प हो गया है. इस चिन्ता में उनके मन की सब क्रियाएं शान्त हो गयीं. समयानुसार ऋषिकुमार लौटे, आते ही उन्होंने जनक से कुशल पूछी. राजा जनक ने कहा—'ब्रह्मचारिन्! मेरी कुशलता आपके अधीन है, मन तो आपका हो चुका है. आपको मन देकर मैं जड़वत् हो गया हूं, किंतु मुझे इसी में परम शान्ति मिल रही है और इस शान्ति से कुशल है.' अष्टावक्र ने कहा—'राजन्! इस जड़ता को तुम समझ लो कि वह चेतनता (आत्मज्ञान) अथवा स्मृति के समीप की जड़ता है और अब तुम्हें वहां तक पहुंचने में विलम्ब नहीं. तुम ज्ञान प्राप्त करने के योग्य हो गये.' अष्टावक्र कहते गये.

'राजन्! सांसारिक विषय मन के अधीन हैं, आत्मा के अधीन नहीं. मन ही देही है, आत्मा विदेह है. मन जब तक शरीर की ओर लगा रहता है, तब तक मन की गति आत्मा की ओर नहीं हो पाती. मानव जब मन को ज्ञान के अधीन कर देता है, तब आत्मा की ओर उसकी गति बढ़ने लगती है. शनैः—शनैः प्राण कोशों के बंधन से मुक्त होकर जीव सत्—चित्—आनन्द बन जाता है. जीव की यही परमोन्नति है.' ऋषिकुमार कहते गये—'यह शरीर पञ्चकोशों का बना थोथा होता है. अन्न से इसकी उत्पत्ति होती है, इसीलिये इसे 'अन्नमय कोश' भी कहते हैं. इसके भीतर 'प्राणमय कोश' है, वह अधिक व्यापक और सशक्त होता है. उसके भीतर 'मनोमय कोश' होता है, वह प्राणमय कोश से भी अधिक व्यापक और सशक्त होता है. हां, वही मनोमय कोश स्थूल शरीर को यत्र—तत्र संचालित करता रहता है. मनोमय के बाद 'विज्ञानमय कोश' है. यह मनोमय कोश से भी प्रबल और सशक्त होता है. जब मानव का मन ज्ञान के अधीन हो जाता है, तब उसका इधर—उधर भटकना समाप्त हो जाता है. विज्ञानमय कोश के बाद 'आनन्दमय कोश' है. आनन्दमय कोश में प्रवेश करते ही शरीर को सुख—दुःख के झंझटों से छुटकारा मिल जाता है. निद्रित अवस्था में जिस प्रकार जाग्रत्—अवस्था के सुख—दुःख समाप्त हो जाते हैं, वही स्थिति आनन्दमय कोश की है. इसके ऊपर है सर्वव्यापक 'आत्मा'. शरीर पर विशुद्ध ज्ञान की सत्ता स्थापित होने पर 'आत्मा' की प्राप्ति होती है. मन को शुद्ध ज्ञान के अधीनस्थ करके—शरीर पर ज्ञान की सत्ता स्थापित करके सूक्ष्म से सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतम की ओर अग्रसर होना ही जीव की 'परमोन्नति' है. राजा जनक! आपने मुझे अपना मन संकल्प कर दिया था, अतः मेरे आदेश से ज्ञान के अधीन होकर इस राज्य का संचालन कीजिये. समस्त जीवों में अपने आत्मा का अनुभव कीजिये. सबसे परे होकर रहिये.' इतना कहकर अष्टावक्र उठकर चलने लगे. राजा जनक ने आग्रह के साथ कहा—'ऋषिकुमार! मुझे ज्ञान प्राप्त हो गया, आप यहीं रहें.' अष्टावक्र ने हंसते हुए कहा—'राजन्! क्या अपने सुख—वैभव में मुझे बांधना चाहते हैं?' राजा जनक नतमस्तक हो गये. अष्टावक्र अपने गंतव्य स्थान पर चले गये. अष्टावक्र की 'महान् मानवता' से अनेकों ज्ञानी बंदीगृह से मुक्त हो गये— एक मानव ने कई मानवों का उद्धार किया

प्रसाद की महिमा

अवसाद व विषाद को प्रसाद दूर कर देता है. अतृप्त व अशांत हृदय को प्रसाद शीतल कर देता है. क्योंकि कहा जाता है कि प्रसाद में प्रभु का वास होता है, और जहां प्रभु विराजते हैं, वहां दुःख कैसा! इसलिए प्रसाद की महिमा अनन्त है. इन्दौर के वेंकटेश मंदिर में मेरा जाना हुआ और जब मैंने दर्शन किये तो पुजारी जी ने मुझे तुलसी व चीनीयुक्त अमृत का पान कराया तो मेरी रग—रग प्रभु के आनन्द में रम गयी. इसलिए प्रसाद सर्व दिलों को साद कर देता है. सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का प्रसाद ढोडा—चटनी खाने के लिए देश व परदेश के प्रेमी लालायित रहते हैं.

प्र= प्रभु, **सा**= साक्षात्, **द**= दर्शन!

—विद्यार्थी विप्रवटु, श्री अमरापुर दरबार, जयपुर

शुद्धि—सुधार

प्रेम प्रकाश सन्देश के सितम्बर अंक में पृष्ठ १४ पर संत नामदेव जी के सत्संग प्रवचन अंश में जो श्लोक प्रकाशित हुआ है, सुधी पाठकवृन्द उसे सुधारकर इस प्रकार पढ़ें— नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद।। (आदिपुराण)

सर्वानन्द महिमा	सर्वानन्द गुरुदेव की, महिमा अपरम्पार। जो जन आये शरण में, भव से उतरे पार।।

पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज-संत मण्डली का देशाटन

यात्रा-दर्शन

जयपुर 14 से 23 सितम्बर

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज द्वारा गुरुनगरी जयपुर में १४ से २३ सितम्बर तक निवास किया गया. इस दौरान गुरुनगरी जयपुर के हजारों हजार भक्तों के साथ देश के विभिन्न भागों से पहुंचे प्रेमियों ने भी प्यारे गुरुदेव के दर्शन-सत्संग का महाआनन्द प्राप्त किया.

दुबई 23 से 30 सितम्बर

प्रेम प्रकाशी मेल-मिलाप का मिनी आयोजन

दुबई वासियों के भाग्य की प्रबलता ही कहेंगे, पूरे सात दिन तक प्यारे गुरुदेव संत मण्डली का पावन सानिध्य मिला वहां रह रहे हजारों प्रेमियों को!

श्री अमरापुर दरबार जयपुर से आचार्यश्री गुरुदेवों को प्रणाम-वन्दन करके २३ सितम्बर की सायं सवा पांच बजे जयपुर के विमानतल से रवाना होकर नई दिल्ली में विमान बदलते हुए इण्डियन एयरलाईन्स के विमान द्वारा रात्रि १०:३० बजे दुबई पहुँचे. यहाँ पर श्री नारायणदास आसवानी (मंदसौर के रहने वाले), श्री शंकरलाल, श्री कैलाशचन्द मनवानी (अमरापुरवासी दादा होतचन्द मनवानी जयपुर वालों के सुपुत्र) सहित सैकड़ों प्रेमी महाराजश्री संत मण्डल के स्वागतार्थ उपस्थित थे. स्वागत-सत्कार के बाद महाराजश्री संत मण्डल को श्री नारायणदास-देवीबाई के निवास स्थान पर सैकड़ों कारों के काफिले में लाया गया. यहाँ पर भी उनके घर पर बहुत बड़ी संख्या में प्रेमी गुरुदेव भगवान के दर्शनों हेतु उल्लासित भाव से प्रतीक्षारत थे. प्रेमियों ने बड़े ही भक्ति भाव के साथ गुरुदेव के आगमन की अपार खुशी में मंगल गीत गाये. महाराजश्री संत मण्डल का तीन दिन तक यहीं पर निवास रहा. शेष दिन शंकरलाल मनवानी के घर पर गुरुदेव संत मण्डली का निवास रहा. पूज्य गुरुदेव भगवान के साथ संत हरिओमलाल जी, संत नरेशलाल (न्यूयार्क), संत भोलाराम, संत राजेश, दादी चेतादेवी मण्डली के अतिरिक्त हांगकांग से संत नामदेव भी आकर सम्मिलित हुए. इसके अलावा जयपुर से २९ व मुरैना से १, सिंध से ५, जाकरता से ३, चायना से २, मनीला से १, हांगकांग से २ प्रेमी भी दुबई प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली के निमंत्रण पर आकर दिव्य सत्संग ज्ञान यज्ञ समारोह में शामिल हुए. ऐसा लग रहा था मानो मिनी मेल मिलाप कैम्प का आयोजन दुबई मण्डली द्वारा किया गया हो. सिन्धी कम्युनिटी कल्चरल सेंटर में आयोजित दिव्य सत्संग ज्ञान यज्ञ समारोह में लगभग एक हजार से अधिक प्रेमियों ने २४ से ३० सितम्बर तक इस ब्रह्मज्ञान यज्ञ में उपस्थित होकर अपने हृदय को गुरुदेव संत दर्शन-सत्संग से आलोकित किया. २४ सितम्बर अवकाश दिवस होने के कारण इस दिन प्रातः ९:३० से ११:३० तक व २५ से ३० सितम्बर तक प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक सत्संग की मौज मची.

दुबई यात्रा के अन्तर्गत इन्दु-विजय, संजय, नन्दिनी भाटिया, मनोहरलाल रामचन्दानी, गोविन्दराम-कविता लख्यानी, राम-बीना बख्शाणी, राम-सीमा तोलानी, शंकरलाल-कविता, शंकरलाल की सुपुत्री डिम्पल, पुरुषोत्तम गुरवानी, नारायणदास देवीबाई हासवानी, शंकरलाल-लता मनवानी, कैलाश-मीनू मनवानी, वन्दना-चिमनलाल दरयानी, मोहनदास-रुक्मणी सांवलानी, विष्णु-मोहिनी के घर भी पावन हुए गुरुदेव संतरज से. कई घरों में सत्संग-भजन-भोजन भण्डारे का भी आनन्द गुरुदेव के सानिध्य में सैकड़ों भक्तों ने लिया.

जयपुर के विख्यात मोनीलेक हॉस्पीटल के नारी लेखराज ओडवानी सहित ४०-५० किलोमीटर दूरी पर रहने वाले भक्त भी गुरुदेव के दर्शन-सत्संग में आकर नित्य सम्मिलित हुए. दुबई के ख्यात साहित्यकार श्री राम बख्शाणी ने भी महाराजश्री के स्वागत में अपनी स्वरचित रचना सुनाई. उन्होंने गुरुदेव के प्रति अपनी भावोक्ति में, दुबईवासियों को अमृतरस से सराबोर करने पर भावभीनी कृतज्ञता व्यक्त की. सिंधी ऐसोसिएशन दुबई सहित अनेक संस्थाओं द्वारा गुरुदेव संत मण्डली अतिथियों का भव्य अभिनन्दन किया गया.

३० सितम्बर की मध्यरात्रि के बाद १२:३० बजे दुबई से जयपुर के लिए प्रस्थान किया गया.

जयपुर 1 से 3 अक्टूबर

माता लीलावन्ती वर्सी महोत्सव

दुबई से व्हाया दिल्ली होते हुए इण्डियन एयरलाइन्स के विमान

द्वारा जयपुर पहुँचकर प्रातः ७:१५ बजे अमरापुर दरबार पर पहुँचे. खजाने वालों का रास्ता स्थित माता लीलावन्ती सत्संग भवन में माता लीलावन्ती का चालीसवां वर्सी महोत्सव १ से ३ अक्टूबर तक पूज्य गुरुदेव भगवान–संत मण्डली के पावन सानिध्य में मनाया गया. १ अक्टूबर को सायंकाल माता लीलावंती सत्संग भवन पहुँचने पर वहाँ की व्यवस्थापक माता वसीदेवी सहित ट्रस्टियों–भक्तों ने गुरुदेव भगवान संत मण्डल का आत्मीय स्वागत किया. सेवाधारी बसंत कुमार ने स्वागत भजन गाकर महाराजश्री संत मण्डल का अभिनन्दन किया. त्रिदिवसीय सत्संग समागम में हजारों की संख्या में भक्तों ने भाग लेकर ज्ञानामृत का पान किया. पूज्य गुरु महाराज के साथ स्वामी मनोहरप्रकाशजी महाराज, स्वामी जयदेवजी महाराज, संत हरिओमलालजी, संत नन्दलालजी, संत नरेशलालजी, संत नरेशलाल (इन्दौर), संत श्रीमुक्त सहित श्री प्रेम प्रकाश संत मण्डली ने वर्सी महोत्सव में भाग लिया.

दुबई–जयपुर में ज्ञानामृत प्रवाह

गुरु–शिष्य का अटूट नाता

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के पावन श्रीमुख से प्रवाहित अमृत

सतगुर मन ठारियो ततो कोटु जन्म जो,
डीओ बारे घर में ठाकुर डेखारियो,
स्वामी निवारियो अविद्या कोटु अंदर जो,
जीउ जोगिनि सां जुड़ियो मंडु मुहबत सां मड़ियो,
मिठा कीन लगनि मिट बिया साहु सारे सांगिनि खे,
अमां मूंखे मोकल डे, घरु कीन वणे मूंखे,
मां त वेन्दुसि जोगिनि डे,
जगु सारो सुञ भायां, दिलि कहिंसां अटिकायां...

गुरु–शिष्य का सम्बन्ध अटूट यानी कभी न टूटने वाला है. पञ्चभौतिक शरीर छोड़ने के पश्चात् परलोक में भी गुरुदेव रक्षा करते हैं. गुरुदेव संतों की महिमा अकथनीय है जिस प्रकार ईश्वर अधर्म का नाश करने के लिए शरीर रूप में अवतार लेकर आते हैं, उसी प्रकार संत गुरुदेव का आना भी जीवों के कल्याण वास्ते ही होता है. संत सद्गुरु जीव को आत्मज्ञान का अमृत पिलाकर उसे अमर कर देते हैं.

'अगर है आश आनन्द की जाओ गुरुदेव की शरणा' इस आत्मानन्द की अनुभूति करने के लिए हमें गुरुदेव संतों की शरण में जाना पड़ेगा. शरणागत को गुरुदेव अभयदान देकर निर्भय करके उसे उस शाश्वत आनन्द की प्राप्ति करा देते हैं जिसके लिये ये जीव जन्म–जन्मांतरों से भटक रहा है. अपार शक्ति दया के भण्डार गुरुदेव उस जिज्ञासु शिष्य पर अपनी कृपा लुटाते हैं जिसने अपना सर्वस्व (मन को अर्पण) अर्पण कर दिया गुरुदेव के चरण–शरण में–

सतगुर मुझको दान दे प्रेम भक्ति विश्वास।
कह टेऊँ नित सुमति दे संतनि मांहि निवास।।

इसलिये हमें गुरुदेव की शरण लेकर अपना उद्धार कर लेना चाहिए. गुरुदेव से हमें नामदान लेकर उनके द्वारा बताई युक्ति के अनुसार नाम सुमरण के साथ अपने कर्तव्य कर्म करेंगे तो हमारा बेड़ा अवश्य पार होगा.

आसन तो लगाना सरल, मगर इस मन को बिठाना मुश्किल है।
माल्हा को घुमाना कठिन नहीं पर मन को घुमाना कठिन है,
क्षण भर में जो सारा जग घूमे, उसे कैसे अचल बनाऊं मैं।
तुमने ये जीवन प्राण दिया, मेरा फर्ज है तुमको ध्याऊं मैं।

हरि के मन मंगल बसे, मंगल ही होय।
अपने मन की जे चहे मंगल जावे खोय।।

जो बनावे आप प्रभु तांहि पर राजी रहो।
जा बनी सा है भली, सदा मुख से यूं कहो।।

सदा दिल में धीरज धारे रखु मन संतोष विचारे,
वहिलूट न वञु तूं भाणो मिठो मञु तूं,
चित जी कुम्हाइ न कली रे।
जेको सबुर सां जीवत धारे, तंहिंजा प्रभु सब दुख टारे,
सदा हरिअ खे ध्याइ सुख दुख में मनाइ।
सो साहिबु समर्थ बुली रे, भली भली थो करे सभु भली रे,
तूं दिल घबराइ ना मन खे मुंझाइ ना, भगवान करे थो भली रे।

महापुरुष अपनी अमृतवाणी में कहते हैं कि जीव का चञ्चल मन कभी तृप्त होने वाला नहीं. एक कामना इच्छा पूरी हुई नहीं कि दूसरी के लिये लालायित हो उठता है. जबकि वह परमपिता परमात्मा जो सबका पालनहार है सबकी जरूरतों का पूरा ख्याल रखता है बस हमें धैर्य संतोष के साथ रहना है.

कर्मानुसार प्राप्त फल को धीरज के साथ भोगने पर हृदय आनन्दोल्लास से भर जाता है.

तेरे मन कुछ और है, हरि के मन कुछ और।
हरि के मन की होन दे मती मचावे शोर।।

जहिं बिधि नाथ होइ हित मोरा। करहुं सो बेग दास मैं तोरा।।
निज माया बल देख विशाला। हियँ हँसि बोले दीनदयाला।।

जेहिं बिधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार।
सोइ हम करब न आन कछु बचन न मृषा हमार।।

नारद की इच्छा थी स्वयंवर में शामिल होने के लिए खूबसूरत सूरत की मांग प्रभु से की, भगवान ने बोला जिसमें तुम्हारा भला हो ऐसा होगा. वानर मुख का स्वयंवर में ज्ञान होने पर क्रोधित नारद ने भगवान को ही श्राप दिया और जब हरि की माया को समझा तो लज्जित होकर प्रभु परमात्मा के प्रति अहोभाव से भर गया. जिस प्रकार बालक के भले की सब जरूरतें माता पूरी करती है उसी प्रकार परमात्मा व गुरुदेव भी अपने सेवक शिष्यों की लाज रखते हैं जिसमें हमारी भलाई छिपी है वैसी कृपा सदा करते रहते हैं.

कई कृपा आ तो जेड़ी ऐड़ो लायकु न आहियां मां,
सदाईं कुरबान वञां तुहिंजे नावं तां, जहिं पियारे प्रेम रसु ड़िनो

कर्तव्य कर्म को करते हुए सब कुछ मालिक पर छोड़ दो. वे हमारा हर तरह से भला ही भला करेंगे, ऐसा पूर्ण विश्वास अपने हृदय में धारण करने पर जीव को दुःख, कष्ट क्लेश नहीं सताते.

तेषाम् योग अभियुक्ता नाम योग क्षेम वहाम्यम्।
अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में...

मन को प्रभु स्मरण से जोड़कर सांसारिक कार्यों को उस मालिक पर विश्वास रखकर करें तो बेड़ा पार होगा.

मुरली मन मोहन की सतगुर दई लखाय।
कह टेऊँ तिस कीर्ति मुख से कही न जाय।।
मुरली मोहन जी सतगुर सुणाई,
मन मोहन की बंसरी बाज रही दिन रैन।

भगवान कहते हैं **'योगी हृदय निवास, भोगी हृदय उदास'** हर एक इन्सान के हृदय में मेरा निवास है, लेकिन उसका ध्यान इधर नहीं है. जिस प्रकार धरती में धन होते हुए भी विस्मृत कर दिया है उसको. इसलिये मन को एकाग्र करके उस हरि का ध्यान करो, उसके ध्यान में ऐसे मगन हो जाओ कि उसके साथ एकलय हो जाओ, फिर देखो उसका आनन्द! जब मन उससे जुड़ जायेगा तो हर क्षण उसके ध्यान में रसमय हो जाएगा. उसके मनमोहक आवाज चित्र दिखाई सुनने लगेंगे.

सुत्रां सखिणा को नहीं सभ के अन्दर लाल।
मूर्ख गुंढि खोले नहीं कर में भया कंगाल।।
बालक वानर दामिनी मक्खी करी के कान।
जैसे ये चंचल सदा तैसे मन को मान।।

यदि उस परमपिता परमात्मा से मिलना चाहते हो तो अन्तःकरण में झांकने के लिए मन को एकाग्र करना ही होगा तभी अन्तर्मुखी होंगे और बाहर के कोलाहल से अन्तर नहीं पड़ेगा और उस मालिक से साक्षात्कार हो जायेगा. इसके लिये तुमको पूर्ण सद्गुरुदेव के पास जाना पड़ेगा. उनके आगे समर्पण करना होगा. उनकी कृपा से जो तुमको मार्ग मिलेगा उस पर चलना होगा, मञ्जिल तभी मिलेगी.

पूर्व पुण्य ते पाइया मानुष का अवतार।
कह टेऊँ तिंह सफल कर स्मरो सतकरतार।।
मिल्यो मानुष जनम तो आहे सो व्यर्थ छड़ि न विञाए....
कबहुं कि कर करुणा कर देही, देत ईश बिन हेत सनेही।

जिन मनुष्यों ने प्रभु स्मरण भजन में अपने जीवन को सफल किया, उनके वर्सी मेले आज भी सभी का मार्गदर्शन कर रहे हैं कि हे जीव अब भी जागो ये समय यूं ही निकला जा रहा है इसे व्यर्थ न गंवाओ. हम अपने इस कीमती समय को यूं ही व्यर्थ गंवा रहे हैं और इसका मिथ्या दोषारोपण करते हैं परमात्मा पर. कलयुग में भी संत भगत हुए हैं जिन्होंने भजन कर उस परम सत्ता से साक्षात्कार कर लिया और जीवों के प्रेरणास्रोत बने. जिनमें मीराबाई, तुलसीदास, गुरु नानकदेव, स्वामी टेऊँराम जी महाराज, माता लीलावंती इत्यादि. जिनकी भक्ति ने लाखों लोगों को अद्भुत प्रकाश से भर दिया. हम भी अपने मन को समझाने की साधने की कोशिश करें, मन को सांसारिक वृतियों से हटाकर प्रभु परमात्मा की भक्ति में जोड़ें तो हमारा जीवन भी संवर जाएगा. सद्गुरु महाराज महापुरुष बार बार यही समझाते हैं कि अपने मन को अर्पण करो, हालांकि यह बहुत कठिन है लेकिन अभ्यास करते रहें सफलता अवश्य मिलेगी. **'जीवन किसी को अर्पण करके तो देख ले'** जिस प्रकार बीज जब अपने आप को मिट्टी में मिला देता है तद्रूप हो जाता है तभी वह वृक्ष बनता है. इसी प्रकार हम भी अपने आप को गुरुदेव द्वारा बताये मार्ग पर चलकर उस परमात्मा से एकाकार कर लेंगे तो हमारा कल्याण होने में देर नहीं लगेगी.

दुबई व जयपुर (माता लीलावंती वर्सी) में संतों के श्रीमुख से ज्ञानामृत प्रवाह

संत जयदेव जी महाराज

जिसका खाना तिसको गाना, हर जुग जुग भगत उपाया,
पैज रखन्दा आइया रामराजे....

भोजन पकते खात हो मुझे बड़ा हैरास।
क्या करूं इस स्वास का मुझे नहीं विश्वास।।
अचो प्रेमु रखी नितु नेमु रखी.....

गुरुदेव संतों के संग पाकर सत्संग में सदुपदेशों का श्रवण कर मन को हरिनाम से ऐसा रंग दें कि उसका रंग कभी ना छूटे.

'दर्शन देख जीवां गुर तेरा पूरन कर्म होया प्रभ मेरा, प्राणी सोच जरा' 'इस जग में क्यों आया, हरि के भजन बिना हीरा जन्म क्यों गंवाया' अपने अन्तर्मन में मंथन करें कि हमें प्रभु परमात्मा ने जो ये जीवन दिया है उसका हम सदुपयोग कर रहे हैं या दुरुपयोग. सत्य का पहचानें और हरिरंग की पावनता में अपने जीवन को गुरुदेव संतों के सानिध्य में रंग दें. बस हर क्षण उस प्रभुरस से सराबोर रखें जिससे हमारा जीवन निर्मल होगा और हमारे लोक परलोक संवर जायेगा.

संत नामदेव जी महाराज

व्यवहार में चुप न बैठना, पुरुषार्थ करना लेकिन सत्संग में शान्त बैठकर ध्यान दें अमृतवचनों पर. तन–मन को एकाग्र करके गुरुदेव संतों द्वारा बताये उपदेशों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें. **'अलख पुरुष की आरसी संत जना की देह, लखना चाहीं अलख को इसी में लख लेह'** संसार में रहकर भी संसार से जुदा होना यह सीखें स्वामी टेऊँराम महाराज के पावन जीवन से. **'स्वामी टेऊँराम वाह जा कई कमाई, वाह जा कई कमाई दरवेश हो इलाही'**. सद्गुरु टेऊँराम महाराज को प्रभु मिलन की ऐसी प्यास हुई कि निद्रा भोजन सब कुछ त्यागकर बस उसीके साथ तादात्मय यानी एकाकार हो गये. हम भी गुरुदेव के बताये मार्ग पर चलकर अपने जीवन का कल्याण करें.

संत हरिओमलाल जी महाराज

भागनि सां मिल्यो थई संतनि जो मेलो,
बुधी वठु वचन ही बुधण जो थी वेलो।

पूर्व पुण्य से मानव देही प्राप्त हुई और पुरुषार्थ एवं ईशकृपा से संतों का संग मिला है तो संतों गुरुदेव से मुक्ति का मार्ग जान कर उस पर चलेंगे तो हमारा जन्म–जन्मों का ये खेल खत्म हो जायेगा. उस परमात्मा की स्तुति सुमरण करने से हमारा उनसे मिलन अवश्य ही होगा. बस भावपूर्वक श्रद्धा भक्ति से उसके पावन नाम का रसामृत पीते रहें.

जोगी थी ता तां जागु मुहिंजा मन।
जागण बिनु ना जुगिती मिलंदी.........

संत स्वयं जागकर मन को प्रभु भजन में लीन कर रहे हैं और जीवों को भी इस सत्मार्ग पर चलने की प्रेरणा करते हैं.

संत नन्दलाल जी

'महापुरुष दुनिया में बड़े काम को आते हैं। मिटा के खौफ मरने का अमर आतम लखाते हैं।।' महापुरुष इस संसार में भक्तों की पुकार सुनकर लोक कल्याण हेतु अवतार लेकर आते हैं व अनन्त जीवों को सत् पथ पर अग्रसर करके ब्रह्मलोक में समा जाते हैं. **'महाजनो ये न गतः स पन्था'** अर्थात् महापुरुष जो पथ इस जीव के कल्याण हेतु बनाकर गए, उनके पद्चिन्हों पर चलेंगे तो हमारा बेड़ा पार हो जायेगा.

संत नरेशलाल जी

'सतगुरु टेऊँराम स्वामी, पूर्ण पर उपकारी, थे वो नित अवतारी' लाखों जीवों ने जिनसे मार्गदर्शन प्राप्त किया और आज भी कर रहे हैं आगे भी उनसे करते रहेंगे वे थे हमारे सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! गुरु महाराज जी कहा करते थे– **'जे चाहीं थे बेड़ो पारि शरणि गुरुअ जी वठु तूं प्यारा'** अपने आत्म कल्याण के लिये हमें गुरुदेव की शरण में जाना पड़ेगा.

संत हरीशलाल

चिन्तन करें, जिस प्रभु ने अनमोल जीवन दिया उसका भजन करें. **'जिसका दिया खाते हो, उसी को भुलाते हो, यही बुरी बात है जी यही बुरी बात है' 'मूंखे बि भुलाई थो सुख खे बि चाहीं थो, तुहिंजो कसूर या मुहिंजो कसूर'** यदि सुख शान्ति को प्राप्त करना है तो उस परमेश्वर को सदा ध्यायें जिससे कल्याण होगा.

संत भोलाराम जी

'वरदान ये ही दे दो मेरे सतगुरु सुखदाते, बीते ये मेरा जीवन तेरे गुण गाते' गुरुदेव भगवान से ही यही मांगे कि इस जीवन में हर क्षण उस हरि का भजन करतें रहें ऐसा आशीर्वाद करें जिससे लोक परलोक संवर जाए. **'पायो जी मैंने राम रतन धन पायो'**.

संत नरेशलाल जी (इन्दौर)

दातार संदे दर ते अरदास जो करे, करतार अची तुहिंजा कम रास थो करे' अरदास प्रार्थना में करुणा प्रेम हो तो परमात्मा जल्दी सुनते हैं. हम परमात्मा गुरुदेव से करुण स्वर में प्रार्थना करेंगे तो हमारा कल्याण होगा.

शोक समाचार

माता पदमादेवी शिवदासानी

पूना। सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को गुरुदेव रूप में वरण करने वाली माता पदमादेवी पत्नि अमरापुरवासी श्री सुन्दरदास शिवदासानी जी ६८ वर्ष की अवस्था में गुरुगोद में ४ सितम्बर को दोपहर अमरापुर धाम सिधारीं. स्पेन में रह रही आपकी संतान के आने के बाद आपका अंतिम संस्कार ९ सितम्बर को किया गया. पूज्य स्वामी देवप्रकाशजी महाराज, स्वामी अनन्तप्रकाशजी महाराज, संत लक्ष्मणलाल सहित बड़ी संख्या में प्रेमप्रकाशियों ने अंतिम संस्कार व श्रद्धाञ्जलि सभा में भाग लिया.

शंकरलाल सामताणी

जाकरता (इण्डोनेशिया)। २ अगस्त १९३७ को अविभाजित भारत के सिंध प्रान्त में गुरुनगरी टण्डेआदम में गुरुभक्त श्री तेजूमल सामताणी के आंगन में जन्मे श्री शंकरलाल सामताणी १४ सितम्बर को (जाकरता में) गुरुगोद में अमरापुर धाम सिधारे. आप अल्पायु में ही सन् १९४० में अपने माता–पिता के साथ इण्डोनेशिया में व्यवसाय की खातिर बस गये. श्री तेजूमल जी के दो पुत्रों श्री शंकरलाल व गोपीचन्द जी को समूचे समाज सहित प्रेमप्रकाशी संसार में शंकर–गोप सामताणी के नाम से जाना गया. आपने गुरुदेव के रूप में पूज्य स्वामी माधवदासजी महाराज को वरण किया. सन् १९७५ में महर्षि सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज जब पहली बार मनीला से जाकरता की यात्रा पर गये तो गुरुदेव भगवान को लेने के लिए उस वक्त सिंगापुर में श्री शंकर सामताणी पहुँचे. और यहीं से प्रेम प्रकाश मण्डल के साथ ऐसा गहरा नाता जुड़ा सामताणी परिवार का कि आज प्रेम प्रकाश मण्डल के सेवको में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं. विनम्र स्वभाव के धनी, मृदुभाषी, व्यवहार कुशल दादा शंकर सामताणी के संयोजन में इण्डोनेशिया में तीन बार प्रेम प्रकाशी मेल मिलाप कैम्प का सफल आयोजन व जाकरता में स्वामी टेऊँराम नेत्र चिकित्सालय की स्थापना आपके सदमार्ग का द्योतक है. आपकी गुरुदेव भगवान के प्रति अटूट निष्ठा भक्ति अनुकरणीय रहेगी. आपके अंतिम संस्कार व शोक श्रद्धांजलि सभा में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की ओर से संत जयदेवजी महाराज सम्मिलित हुए. बारहवें पर आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा में संत अनन्तप्रकाशजी महाराज शामिल हुए.

डॉ. प्रदीप कुमार सिंघल

'स्वामी शान्तिप्रकाश धर्मार्थ चिकित्सालय, ग्वालियर' के वरिष्ठ नेत्र विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप कुमार सिंघल, ५ अक्टूबर, २०१० मंगलवार की सायंकाल ४ बजे गुरु महाराज की गोद में अमरापुर धाम सिधारे। पिता श्री गोवर्धनदास सिंघल के आंगन में १५ जून १९५९ को ग्वालियर में ही जन्मे प्रदीप कुमार जी बाल अवस्था से ही मेधावी रहे। आपने अपनी शिक्षा ग्वालियर में ही पूरी की। आपने समाज के निर्धन असहाय लोगों की सेवा करने के लिए सन् १९९५ से इस अस्पताल से जुड़ कर हजारों नेत्रपीड़ितों को अपने अनुभव से लाभ पहुँचाया। आपने रविवार ३ अक्टूबर को भी इस चिकित्सालय में सभी भर्ती मरीजों के ऑपरेशन अपने कुशल हाथों से किये।

आपने अभी हाल ही में चैन्नई में जाकर डायबिटीज मरीजों के पर्दे की बीमारी (रेटिनोपेथी) से सम्बन्धित कोर्स पूरा किया था, और अभी इस विशिष्ठता का लाभ ग्वालियर वासियों को देने के लिए कार्य योजना बनाई ही जा रही थी कि आपको काल के क्रूर हाथों ने हमसे छीन लिया। सरलता, सहजता में रहने वाले निर्मल स्वभाव के धनी मिलनसार हंसमुख आदरणीय डॉ. प्रदीप कुमार सिंहल जी की कमी सदैव इस अस्पताल को महसूस होती रहेगी।

दिवंगत आत्माओं की सद्गति के निमित श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डली ने आचार्यश्री परमात्मा से प्रार्थना की (पल्लव पाया).

जयपुर में पाँचवाँ सिंधी सामूहिक विवाह समारोह 26 दिसम्बर को

जयपुर। श्री अमरापुर दरबार की सेवाभावी संस्थाओं श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली, श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल, श्री प्रेम प्रकाश महिला मण्डली के संयुक्त तत्वावधान में आचार्यश्री मंगलमूर्ति सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की मंगल आशीष एवं पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के पावन सानिध्य में २६ दिसम्बर, २०१० रविवार को पाँचवें सिंधी सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन बनी पार्क सिंधी कॉलोनी में स्वामी सर्वानन्द पार्क में किया गया है. इस हेतु गत १९ सितम्बर को पूज्य गुरुदेव भगवान की पावन अध्यक्षता में आयोजन समिति की एक वृहद् बैठक का आयोजन श्री अमरापुर दरबार पर किया गया. जिन परिवारों में बच्चों के रिश्ते तय हो चुके हैं उनके पंजीयन का कार्य ३ अक्टूबर से श्री अमरापुर स्थान में शुरू कर दिया गया है. जिन परिवारों में १ दिसम्बर तक भी बच्चों के रिश्ते तय हो जाएंगे, वे इस सामूहिक विवाह सम्मेलन में सम्मिलित हो सकते हैं. अधिक जानकारी के लिये श्री अमरापुर स्थान (डिब) पर सम्पर्क करें.

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में

प्रेम प्रकाश धाम, मलकागंज, दिल्ली में

स्वामी जयप्रकाशजी महाराज का 35 वाँ वर्सी महोत्सव

सोमवार, 29 नवम्बर से शुक्रवार, 3 दिसम्बर 2010 तक

कार्यक्रम	सोमवार, 29 नवम्बर	मंगलवार, 30 नव. से गुरुवार, 2 दिस. तक	शुक्रवार, 3 दिसम्बर 2010
	प्रातः 8 से 11 बजे तक हवन, श्री प्रेमप्रकाशी ध्वजावन्दन! सायं 4 से 8 बजे तक सत्संग, पाठों का आरम्भ!	प्रतिदिन सायं 4 से 8 बजे तक सत्संग!	सायं 4 से 6 बजे तक महिला मण्डली का भजन-कीर्तन 6 से 9 बजे तक सत्संग, पाठों का भोग, तत्पश्चात् पूज्य गुरुदेव पल्लव पाकर महोत्सव का समापन करेंगे! पांचों दिन गुरु महाराज का भण्डारा रहेगा!

सेवा में: **स्वामी जयप्रकाश सेवा समिति, प्रेम प्रकाश धाम, टेक्सी स्टेण्ड के पास, मलकागंज, दिल्ली फोन : 23859774**

सेवा में: **संत जयदेव प्रेमप्रकाशी**
मो. 098101-90467

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पावन अध्यक्षता में

प्रेम प्रकाश आश्रम कोटा में

कार्तिकोत्सव

-दिव्य सत्संग समारोह

बुधवार 17 नवम्बर से रविवार 21 नवम्बर 2010

प्रतिदिन सत्संग प्रातः 7 से 10 व सायं 5 से 8 बजे तक

कार्यक्रम	बुधवार, 17 नवम्बर कार्तिक एकादशी पर्व	गुरुवार, 18 नवम्बर	शुक्रवार, 19 नवम्बर	शनिवार, 20 नवम्बर	रविवार, 21 नवम्बर
	प्रातः 5 से 7 बजे तक कार्तिक स्नान, हवन, सत्संग श्री हरिनाम संकीर्तन सायं 5 से 7 बजे तक श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, कोटा	पूज्य गुरुदेव भगवान का आगमन सायं 4 बजे स्वागत शोभायात्रा गीता भवन से आश्रम तक.	प्रातः 11 बजे कन्या भोज श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, श्रीपुरा कोटा पर	बी.एस. दयानी निवास डिसपेन्सरी के पास, दादाबाड़ी, कोटा प्रातः 10 से 12 बजे तक सत्संग वर्खा	प्रातः 5 से 7 बजे तक प्रभातफेरी, 7 से 10 बजे तक सत्संग, 10 से 11 बजे तक हवन 11 से 12 बजे तक सत्यनारायण स्वामी की कथा, पाठों के भोग, आम भण्डारा. सायंकाल 5 से 8 बजे तक सत्संग व पूज्य स्वामी जी द्वारा पल्लव पाकर महोत्सव का समापन करेंगे.

पता: **प्रेम प्रकाश आश्रम,** श्रीपुरा, सिन्धी चौक, कोटा
फोन: 0744-6541777 मोबा. 94141-77781

सेवा में: संत मनोहरलाल प्रेमप्रकाशी
संत श्यामलाल प्रेमप्रकाशी
श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली

आध्यात्मिक वर्ग पहेली-81

1			2		ॐ	3	
	ॐ	ॐ		ॐ	ॐ		ॐ
4	5	ॐ	ॐ	6			7
8		9	ॐ		ॐ	10	
ॐ	11				ॐ	ॐ	ॐ
12		ॐ	ॐ	13		14	15
	ॐ	16	17	ॐ	ॐ	18	
19		ॐ	20				

बाँए से दाएँ :

01. शशि पर राहू की छाया. (2.3)
03. चतुराननः जग के रचनहारे. (2)
04. नुकसान;............लाभ, जीवन, मरण, यश, अपयश विधि हाथ. (2)
06. जब धरती पर दुष्टों का.........बढ़ता है तब प्रभु अवतार लेते हैं. (4)
08. संसार एक.........है जहाँ प्राणि कुछ समय के लिए ठहर कर चला जाता है. (3)
10. ढंग; तरीका; परम्परा; रिवाज. (2)
11. प्रेम के देवता. (4)
12. देवता; स्वर का अपभ्रंश. (2)
13. सावित्री के पति. (4)
16. सागर जिसमें श्री विष्णु शेष शैय्या पर विराजते हैं. (2)
18. दशरथ नंदन. (2)
19. एक वेद; चार नीतियों में से एक. (2)
20. अर्जुन व चित्रांगदा का पुत्र जिसने अर्जुन से युद्ध किया. (5)

ऊपर से नीचे :

01. रावण की तलवार. (4)
02. प्रभु; ईश्वर; ....को भजे सो..........को होई. (2)
03. नियम संयम से रहने वाला व्यक्ति. (4)
05. वह अनन्त असीम जिनका कोई रूप नहीं. (4)
06. दीपावली कार्तिक की इसी तिथि को होती है. (अपभ्रंश) (4)
07. मदन की पत्नी. (2)
09. मृत्यु के देवता. (2)
12. 'अहिन की माता' जो विशाल मुख खोलती चली गई पर हनुमान नहीं हारे. (3)
14. विष्णु का एक अवतार जिसमें उन्होंने दाँत पर धरती धारण की. (3)
15. झुक कर नमस्कार करना. (3)
17. ईश्वर के लिए बहुधा प्रयुक्त शब्द; '.........खैर करे'. (2)

आध्यात्मिक वर्गपहेली-80 के सही हल

1 उ	र्व	2 शी	ॐ	3 वा	यु	ॐ	4 स
त	ॐ	5 ल	ख	न	ॐ	6 नि	त्य
7 रा	घ	व	ॐ	8 प्र	9 ति	ष्ठा	ॐ
य	ॐ	10 ती	र्थ	स्थ	ल	ॐ	11 प
ण	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	12 चौ	स	र
ॐ	13 गो	14 र	ख	15 ना	थ	ॐ	मा
16 मा	ध	व	ॐ	ग	ॐ	17 पा	र्थ
18 न	न	ॐ	19 द	र	वे	श	ॐ

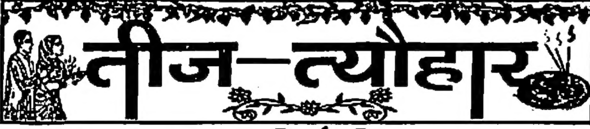
प्रस्तुति-सुधा जौहरी

पहेलियाँ

1. सीता ने जब राम को देखा रूप अति मन भाया।
   जनकनंदिनी ने मंदिर में किन देवी को ध्याया?
2. शिला बनी मग में पड़ी थी गौतम की नार।
   राम चरण रज स्पर्श से हुआ तुरत उद्धार?
3. सागर मंथन से निकली वह कौन सी वस्तु महान,
   जिसकी एक बूँद करती सबको अमरत्त्व प्रदान?
4. राधा गोपी मातु यशोदा कोई रोक न पाया,
   कहो कौन कान्हा को गोकुल से मथुरा को लाया?
5. सीता, राम, लखन रहते थे कहो कौन से धाम,
   जहाँ सूपनखा ने देखे लक्ष्मण देखत हुई सकाम?

उत्तर : १. गौरी/पार्वती २. अहिल्या ३. अमृत ४. अक्रूर ५. पंचवटी.

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-77 व आध्यात्मिक वर्गपहेली-80 के सही हल भेजने वालों के नाम अमरापुर धाम जयपुर से प्रेमप्रकाशी संत नवीन, संत जीतु, संत हेमन्त, जयराम (जयपुरी), हनुमान, चेंदीमल (चेंदा), साहिब (भुगड़ोमल), लंकेश, साहिबसिंह (भुगड़ोमल), अर्जनिया, कमली, लंकेश, गुड्डा (डूडी), इन्द्रकेश, तोलाराम (तेली), पप्पू (छोटा), मंजनू, हिमांशु, जयपुर से प्रेमप्रकाशी जतिन, सोनिया, सारिका, कविता, अशोक पुरसानी, अमरावती से प्रेमप्रकाशी संत महेन्द्रनाथ (इन्द्रराज), विशाल, दिलजीत, शैना, ज्योति, पंकज, सरोज, धीरज, अंशुल, शिखा, प्रिया, सरू, कविता, राजू, बबली, रिंकी, अर्शी, शिवानी, स्नेहिल, सुरेन्द्र, दीपेश, कोमल, वीरू, महेन्द्र, तरू, नेहा, रीमा, सुधा, दिलीप, अनिल, हरीश, गुड़िया, सोनी, करतार, अनिल, सखी, सर्वानन्द, ज्ञानीबाई, मुम्बई से प्रेमप्रकाशी अशोक कुमार मोटवानी, पलवल से प्रेमप्रकाशी अशोक कुमार सरदाना, बैरागढ़ भोपाल से प्रेमप्रकाशी हीरा कन्हैयालाल, नीरज, अश्विनी सीतलानी, कामठी से प्रेमप्रकाशी सुनीता, सरिता, रवि मुलानी, जोधपुर से प्रेमप्रकाशी ललित हासानन्द सचदेवानी, गांधीधाम से प्रेमप्रकाशी जयवन्ती एम. भगतानी, पुरुषोत्तम केसवानी, रमेश ताराचन्द बूलचन्दानी, सुरेश चतुरानी, सूरत से प्रेमप्रकाशी गोपी एन. बसरानी, वाराणसी से प्रेमप्रकाशी लीना भगवानदास जाजानी, भाटापारा से प्रेमप्रकाशी विनय कुकरेजा, मंदसौर से प्रेमप्रकाशी बुद्धप्रकाश, अजमेर से प्रेमप्रकाशी सुलोचना भम्भानी, इन्दौर से प्रेमप्रकाशी जयराम, घनश्यामदासपारवानी, वर्षा, हेमा, जयश्री बजाज, कविता लोहानी, प्रीति तलरेजा, गड्डू, जोधपुर से प्रेमप्रकाशी ललित हासानन्द सचदेवानी, बैरागढ़ भोपाल से प्रेमप्रकाशी हीरा कन्हैयालाल, नीरज, अश्विनी सीतलानी, धमतरी से प्रेमप्रकाशी लक्ष्मीदेवी, डिम्पल, विदिशा पंजवानी, धना बबला सोनी, ब्यावर से प्रेमप्रकाशी लक्ष्मी, उत्तमदेवी, संगीता, मानसी, हितेश, हरिकिशन वासवानी.



15 अक्टूबर 2010–शुक्रवार– श्री दुर्गाष्टमी

16 अक्टूबर 2010–शनिवार– श्री दुर्गानवमी, महानवमी

17 अक्टूबर 2010–रविवार– विजयादशमी, दशहरा, सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का जन्मोत्सव सभी आश्रमों पर शुरु

18 अक्टूबर 2010–सोमवार– पापांकुशा एकादशी, तुला संक्रान्ति

21 अक्टूबर 2010–गुरुवार– सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जयंती महापर्व (जन्मोत्सव समापन)

22 अक्टूबर 2010–शुक्रवार– शरद पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत

23 अक्टूबर 2010–शनिवार– स्नान दान पूर्णिमा, कार्तिक स्नानारम्भ

26 अक्टूबर 2010–मंगलवार– श्री गणेशचतुर्थी व्रत, करवा चौथ व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 7:40 बजे

30 अक्टूबर 2010–शनिवार– अहोई अष्टमी

02 नवम्बर 2010–मंगलवार– रमा एकादशी

03 नवम्बर 2010–बुधवार– धनतेरस, धन त्रयोदशी

04 नवम्बर 2010–गुरुवार– नरक चतुर्दशी, श्रीधनवन्तरि जयंती

05 नवम्बर 2010–शुक्रवार– दीपावली (मंगलमयी शुभकामनाएं)

06 नवम्बर 2010–शनिवार– अमावस्या, अन्नकूट, श्री गोवर्धन पूजा

07 नवम्बर 2010–रविवार– चन्द्रदर्शन, भाईदूज कार्तिकोत्सव शुरु श्री अमरापुर दरबार सहित अनेक आश्रमों पर

09 नवम्बर 2010–मंगलवार– वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत

11 नवम्बर 2010– गुरुवार– सांई टेऊँराम चौथ

14 नवम्बर 2010–रविवार– गोपाष्टमी

15 नवम्बर 2010–सोमवार– आँवला अक्षय नवमी

17 नवम्बर 2010–बुधवार– हरि प्रबोधिनी एकादशी, तुलसी विवाह

21 नवम्बर 2010–रविवार– कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानक जयंती

25 नवम्बर 2010–गुरुवार–श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 8:32

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली–78

प्रश्न–1. बद्रीनाथ में सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने आखिर में जिज्ञासुओं की जिज्ञास को किस प्रकार शान्त किया?

प्रश्न–2. स्वामी सर्वानन्द है साचा.................इस छन्द को पूरा लिखें एवं ये छन्द किस महापुरुष द्वारा लिखा गया है, उसका नाम लिखें?

प्रश्न–3. किस भगवद्विश्वासी महापुरुष की घटना को प्रेम प्रकाश सन्देश में लिखा गया है?

प्रश्न–4. धनतेरस पर किसके निमित्त दीपदान करने का विधान शास्त्रों में बताया गया है?

प्रश्न–5. दीपावली पर किस प्रकार थाली सजाकर दीपमालिका पूजन करने का विधान बताया गया है?

प्रश्न–6. त्राहि त्राहि दुख हारिणी...............इस दोहे को पूरा लिखें?

प्रश्न–7. भक्त प्रह्लाद को किन गुणों वाले सद्‌गृहस्थों के प्रिय होने की बात माता महालक्ष्मी द्वारा बताई गई है?

प्रश्न–8. नीबू के छिलके...........................दोहे को पूरा करें?

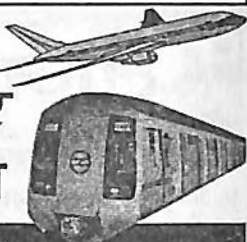
प्रश्न–9. भूख समय भोजन करे.........................दोहे को पूरा लिखें?

प्रश्न–10. जेहिं बिधि होइहि................रामायण की चौपाई को पूरा लिखें?

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली–77 के सही उत्तर 1. श्राद्ध पितृपर्व जिसे महालय भी कहते हैं भाद्र शुक्ल पूर्णिमा से आरम्भ होकर आश्विन कृष्ण अमावस्या पर सम्पन्न होते हैं. 2. नवरात्र पर्व पर दुर्गा माता के नौ स्वरूपों की पूजा करनी चाहिए– शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी व सिद्धिदात्री. 3. नवरात्रा में व्रत रखने वालों को नौवें दिन दुर्गा माता के स्वरूप सिद्धिदात्री की पूजा–अर्चना करके दशमी को व्रत का पारण करना चाहिए. 4. श्री अमरापुर दरबार द्वारा शुरू की गई मोबाईल सेवा द्वारा प्रेमियों को नित सर्वानन्द संदेश (अमृत वचन) से अपने जीवन को संवारने का अवसर मिलेगा. 5. www.premprakashsandesh.com पर प्रेम प्रकाश संदेश उपलब्ध है. 6. 'गर गुरु हो कामिल शिष्य हो आमल तो प्रकृति भी हो जाती शामिल'. 7. तत्त्व विज्ञान के अनुसार प्रथम सोपान में 'गुरु' की आवश्यकता को बताया गया है. 8. रामावतार में समुद्र पर सेतुबन्ध बनाने हेतु बड़े–बड़े पाषाणखण्डों की आवश्यकता हुई, पवनपुत्र हनुमान जब इस गिरिराज को उठाकर ला रहे थे, तभी घोषणा हुई कि सेतुबन्ध का कार्य पूर्ण हो चुका है, अब पाषाणखण्ड की कोई आवश्यकता नहीं है. विवश होकर हनुमान जी ने लौटकर पूर्ववत् स्थान पर ही पर्वतराज को स्थापित कर दिया, उस समय गिरिराज को महान क्षोभ हुआ कि मैं श्रीराम के किसी काम न आ सका. 9. यह जीव जब तक दुःखी रहता है जब तक उसे ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई है, ज्ञान प्राप्त होते ही यह जीव अत्यंत सुखी हो जाता है. 10. 'नाम न चाहा जिन्होंने, अमर उनका नाम है। यश जिन्हें भाया नहीं, उनकी प्रसिद्धि आम है। फल मिले उनको सभी, जो नित रहें निष्काम हैं। जीवन जीया उपकार में, दिया प्रेम का पैगाम है। ऐसे गुरुवर पूज्य शांतिप्रकाश को प्रणाम है.



श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरु वर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का



यात्रा कार्यक्रम

जयपुर निवास के समय मोबाईल बन्द रहेंगे

16 अक्टूबर	2010		यात्रा	☏ 098290-14850, 094140-67850
17 से 24 अक्टूबर	2010	तक	आस्ट्रेलिया (सद्गुरु सर्वानन्द जयंती)	☏ 098290-14850, 094140-67850
25 अक्टूबर	2010		यात्रा	☏ 098290-14850, 094140-67850
26 से 29 अक्टूबर	2010	तक	पलवल (वार्षिक महोत्सव)	☏ 098290-14850, 094140-67850
30 से 31 अक्टूबर	2010	तक	हथीन	☏ 098290-14850, 094140-67850
1 से 2 नवम्बर	2010	तक	पिनगंवा	☏ 098290-14850, 094140-67850
3 से 7 नवम्बर	2010	तक	जयपुर	☏ 0141-2372424, 2372423
8 से 10 नवम्बर	2010	तक	पूना (कार्तिक महोत्सव)	☏ 098290-14850, 094140-67850
11 से 12 नवम्बर	2010	तक	पिम्परी (कार्तिक महोत्सव)	☏ 098290-14850, 094140-67850
13 नवम्बर	2010		यात्रा	☏ 098290-14850, 094140-67850
14 से 15 नवम्बर	2010	तक	जयपुर (गोपष्टमी महोत्सव)	☏ 0141-2372424, 2372423
16 से 17 नवम्बर	2010	तक	सीकर	☏ 098290-14850, 094140-67850
18 से 21 नवम्बर	2010	तक	कोटा (कार्तिक महोत्सव)	☏ 098290-14850, 094140-67850
22 नवम्बर	2010		भवानीमण्डी (वार्षिकोत्सव)	☏ 098290-14850, 094140-67850
23 से 24 नवम्बर	2010	तक	मन्दसौर (वार्षिकोत्सव)	☏ 098290-14850, 094140-67850
25 से 27 नवम्बर	2010	तक	जयपुर	☏ 0141-2372424, 2372423
28 नव. से 3 दिस.	2010	तक	दिल्ली (स्वामी जयप्रकाश महोत्सव)	☏ 098290-14850, 094140-67850
4 से 5 दिसम्बर	2010	तक	यात्रा	☏ 098290-14850, 094140-67850
6 से 8 दिसम्बर	2010	तक	रामेश्वरम्	☏ 098290-14850, 094140-67850
9 से 12 दिसम्बर	2010	तक	मद्रास	☏ 098290-14850, 094140-67850
13 से 14 दिसम्बर	2010	तक	यात्रा	☏ 098290-14850, 094140-67850
15 से 16 दिसम्बर	2010	तक	जयपुर	☏ 0141-2372424, 2372423
17 दिसम्बर	2010		अजमेर (गीता जयंती महोत्सव)	☏ 098290-14850, 094140-67850
18 से 19 दिसम्बर	2010	तक	बड़ौदा (गीता जयंती महोत्सव)	☏ 098290-14850, 094140-67850
20 से 22 दिसम्बर	2010	तक	सूरत	☏ 098290-14850, 094140-67850

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के पावन सानिध्य में अमरलोक धाम, आदर्श नगर जयपुर का वार्षिकोत्सव

(गुरुवार, 25 नवम्बर 2010, प्रातः 9 से 12:30 बजे तक)

साईं टेऊँराम बाबा की लीलाएँ

चित्रकथा-72

चित्रांकन लेखन – सुधा जौहरी, जयपुर

पितामह भीष्म लहू-लुहान शर शय्या पर पड़े थे







भीष्म पितामह कहते गए। युधिष्ठिर व अन्य पाण्डव एक एक शब्द आत्मसात करते गए



अचानक अश्रु बहाती द्रौपदी ने बीच में प्रश्न किया



भीष्म ने आँखें मूँद लीं। आंसू बह चले। लहू लुहान हाथों को जोड़ कर क्षमा माँगने का प्रयास किया



सामीअ जा सलोक

(प्रो. लक्ष्मण परसराम हर्दवाणी, अहमदनगर)

जंहिंखे परम पारिसु, लगो संगु साधूअ जो,
सो केवल कंचनु थियो, छडे ममता मिसु,
सदा रहे सामी चए, खुलासो ख़ालिसु,
ज़ाणे सारी विसु, चमत्कारु चेतन जो।

सामी साहिब बुधाइनि था त जंहिं मनुष खे संतनि जे संगरूपी परम पारस पथर जो स्पर्शु थियो, उहो मनुषु पंहिंजी ममता आदी त्यागे सचो सोनु (कंचनु) बणिजी वियो. अहिड़ो मनुषु हीअ सारी सिरिष्टी (विश्वु) चेतन (परब्रह्म) जो चमत्कारु थो समुझे.

संग सुहबत जे करे इन्सान में सुठा या बुरा संस्कार अचनि था. इन्सानु जंहिं खेत्र में, वातावरण में रहे थो, उन जो उन ते असरु जरूर थिए थो. सत्संग जे बारे में पिणु इहा ग़ाल्हि चई सघिजे थी. संतनि जे संग जो मनुष ते सदाई सुठो प्रभावु थींदो आहे. सत्संगु करे बुरो इन्सान बि सुठो बणिजी वेंदो आहे, सुधिरी वेंदो आहे. चंदन जे संग–सुहबत में निमु जों वणु पिणु पंहिंजी कौड़ाणि त्यागे छडींदो आहे, मिठो बणिजी वेंदो आहे. संत साख्यात परमात्मा जा रूप हूंदा आहिनि, संत ज़ाणी ज़ाणणहार हूंदा आहिनि, उन्हनि जो सहवासु मिलण करे मुक्ती मिले थी. तंहिंकरे संत रामदास पिणु चवनि था त को ज़ाणू, अंतरज्ञानी गुरु करणु घुरिजे, उन खां नामु वठणु घुरिजे. गुरुअ जे संपर्क ऐं ज्ञान द्वारा मनुष जो अज्ञानु दूरि थी वञे तो. संत कबीर साहिब पिणु हिक दोहे में संतनि जी महिमा हिन रीत बुधाई आहे.

संगत कीजै साधु की, कभी न निष्फल होय।
लोहा पारस परस ते, सो भी कंचन होय।।

साधू संतनि जी संगति करणु कड़हिं बि अजाई कोन थींदी आहे. जहिड़ीअ तरह पारस मणीअ जे स्पर्श (छुहाअ) सां लोहु सोनु बणिजी वेंदो आहे, तहिड़ीअ तरह संतनि जी संगति में दुर्जन इन्सान बि सज्जन (भला इन्सान) बणिजी वेंदा आहिनि. सामी साहिब पिणु सागी ग़ाल्हि चवनि था त जंहिं मनुष खे साधू–संत जो संगरूपी पारस जो स्पर्श थियो, उहो सचो सोनु बणिजी वियो, ममता–मोहु त्यागे खरो मनुषु बणिजी वियो. संतनि उन खे पाण जहिड़ो पारसु ई बणाए छडियो. अहिड़ो मनुषु अंदर में परमात्मा पसे थो, हुन में ज्ञान जो प्रकाशु थिए थो. हाणे हू सभिनी किस्मनि जे बंधननि खां आजो थी सदाई एकांत में रहे थो. हाणे हू समुझे तो त हीउ सारो जगतु परब्रह्म, परमेश्वर जो ई चमत्कारु आहे. इहा दृष्टी, अंतर जी बूझ संतनि जे संग में अचण करे ई मनुष खे प्रापति थिए थी.

होय शुद्ध, मिटि कलुषता, सब संगति को पाय।
जैसे पारस को परसि, लोह कनक ह्वै जाय।।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : श्रीचंद पंजवानी के लिए मुद्रकः सुनील पंजवानी द्वारा सत्री प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित तथा कार्यालयः प्रेम प्रकाश संदेश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर -474001 22 से प्रकाशित किया गया।
(कार्यालय फोन प्रातः 8 से 10 व सांय 4 से 8 बजे तक 0751–4045144) फैक्स 0751–4045144
सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, 2627427 प्रबन्ध सम्पादक : श्रीचंद पंजवानी, फोन : 0751–2454183

RNI MPHIN/2008/25627
डाक रजि. ग्वालियर संभाग – 161/2008–10
(R.M.S. Posting date Eve

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रंमाक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है,शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना भी आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे Highlight करके दर्शायी गई है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र क
– व्यवस्थापक

RH-6670-41305-10/2010 LAST COPY
SHRI LAKSHMAN MOOLCHANDANI
LUCKY GARMENTS, OM SHRI JI MKT
OPP: PRADEEP, CHOBRUJA
BHARATPUR (RAJ)